



जनवरी 2013 ■ ₹ 25/-

चन्दामामा

नव वर्ष की शुभ कामनाएँ



PARLE

Ask your retailer
FREE
SLAM
ATTAX
TRADING CARD GAME

With

FullToss
Karaare Masala Sticks

जमा करें सभी
गोल्ड** और सिल्वर** फ़ॉइल कार्ड्स
और बन जाएंगे गेम चैम्प.
उपलब्ध है
रु.10 और रु.20 पैक के साथ.

₹20/-

₹5/-

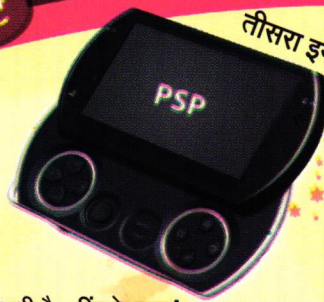
₹10/-



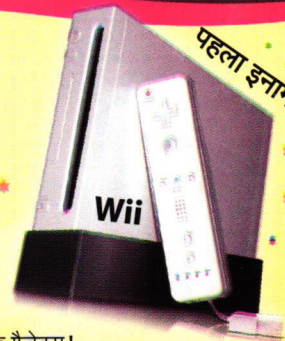
SMS कॉन्टेस्ट



दूसरा इनाम



तीसरा इनाम



पहला इनाम

खेल अभी जारी है... रिंग के बाहर!

इस आसान से सवाल का जवाब दीजिए और आप शायद जीत जाएं हाई-टेक गैजेट्स!

स: पारले फुलटॉस आए — — अलग फ़्लेवर्स में.

A.3 B.6 C.10

FULLTOSS<SPACE>A/B/C को 53636 पर SMS करें

साथ ही जीते जा सकते हैं 5000 शानदार सांत्वना इनाम!!

Winners will be chosen through a lucky draw of all correct entries. Premium SMS charges apply upto Rs.3 per SMS. Parle may at anytime, at its discretion, change the prizes mentioned above without prior notice and the prizes are not transferable or encashable. Last date for SMS entries is 31st December 2012 at 24.00 hrs. For terms and conditions please visit our website: www.parlefulltoss.com

For details, please visit www.parlefulltoss.com

Offer valid till stocks last. Stock also available without this offer.

MRP (Incl Of All Taxes):- Rs. 5/- (Net Wt 21g), Rs. 10/- (Net Wt 45g), Rs. 20/- (Net Wt 95g).



© 2012 WWE All Rights Reserved.
© Topps Europe Limited 2008.

* Regular cards available with every Rs. 5/- pack of Parle FullToss

** Available with every Rs. 10/- & Rs. 20/- pack of Parle FullToss.

*Conditions apply

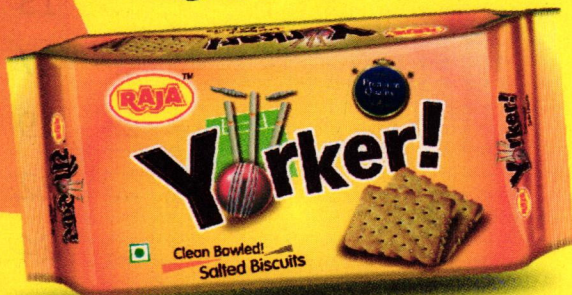
everest/PB/851-12 hin



Taste at it's Best

BISCUITS

पेश करते हैं दो अनोखे स्वाद...



MRP. 20/- (200g)



MRP. 20/- (200g)



MRP. 10/- (110g)



MRP. 10/- (110g)

असली मक्खन और काजू का स्वाद

Also Available :



MRP. 5/- (50g)



MRP. 5/- (60g)



MRP. 5/- (60g)

Shortly Launching :



**Manufactured by : RAJA UDYOG PVT. LTD. Works : Plot No. 5-15, Sector-1B, SIDCUL Haridwar, Uttarakhand
7, B.T. Road, P.O. Sukchar, 24 Parganas (North), Kolkata-700115, West Bengal E-mail : rajaudyog_delhi@yahoo.co.in**

For Trade Enquiry Contact : 011-46131936, 42141336



January 2013

₹25/-

**Founded by B. Nagi
Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :

Prashant Sharad Mulekar

Associate Editor :

R. Vaasugi

Sub Editor :

Patricia Pandian

Senior Artists :

K.C. Sivasankaran (Sankar),
Gandhi Ayya, P. Mahesh,
Sandeep Solkar.

Layout Designers :

B. Thirumal,
N. Sivakumar.

Production In-charge :

Prashant Pawar

Circulation :

circulation@chandamama.com

Assistant Managers -**Sales & Circulation :**

Rajendra K. Jadhav,
Subhankar Rej.

Sales Officer - Circulation :

K. Ravishankar

Advertisement :

sales@chandamama.com

Customer Help :

Ph: 022 40786043

Head Office :

CHANDAMAMA INDIA LTD.,

P.O. Box No : 19407,

Mumbai - 400 093.

Phone : +91 22 28312872 /

28311849

Email :

chandamama@chandamama.com

Website :

www.chandamama.com

Published, Printed and Owned by

CHANDAMAMA INDIA LTD.,

Published and Printed on their behalf by

Prashant Sharad Mulekar

Published At : B-3, Lunic Industries,

"B" Cross Road, Opp.SBI, MIDC, Andheri (E),

Mumbai - 400 093.

Printed At : Mothers Graphics (I) Pvt. Ltd.,

91D, Govt. Ind. Estate, Charkop,

Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Editor : Prashant Sharad Mulekar

अनुक्रम

चन्दामामा

Volume-4

January 2013

Issue-01

* पाठकों के पत्र	...	04
* वज्र कंकणा	...	09
* अनमोल-उपहार	...	13
* भवानी का अनुग्रह	...	17
* नमस्कार नारंग	...	19
* दुर्वासा की हँसी	...	22
* बीरबल	...	24
* आस्तिक-नास्तिक	...	26
* भल्लूक मांत्रिक	...	28
* बब्बू का मित्र - तोता	...	32
* भारतदर्शक	...	34
* चूँ-चूँ का डिब्बा	...	35
* भोजन राजा	...	36
* कृष्ण की कहानी - १	...	38
* युवा योगी!	...	42
* युवा सितारे	...	43
* चुटकुले	...	44
* किचन का पन्ना	...	45
* सामान्य ज्ञान पेहेली - ४८	...	46
* त्वरित फॉर्मूला	...	47
* न्यायकर्ता	...	48
* ट्रेजर बॉक्स	...	50

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

स्वागत २०१३

चन्दामामा परिवार अपने सभी पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएँ देता है!

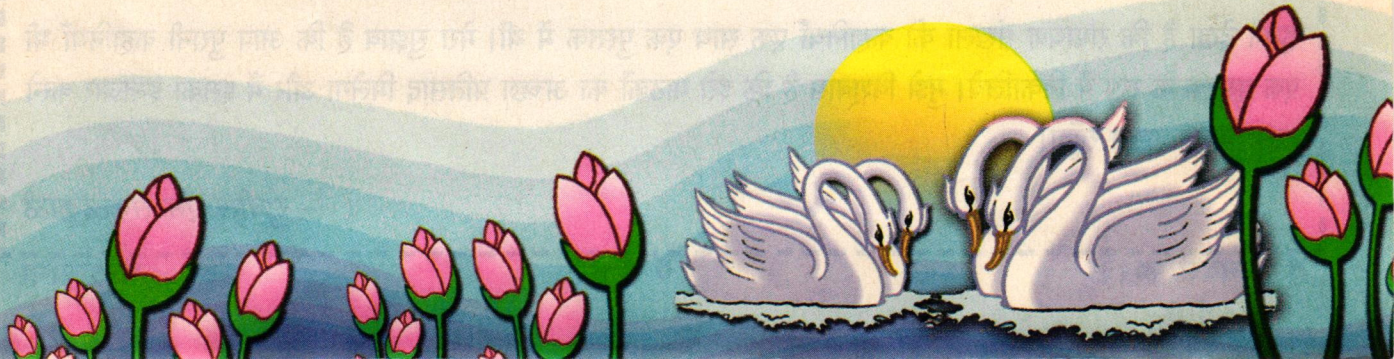
एक ओर जहाँ परिवर्तन ही एकमात्र सत्य है, चन्दामामा में हम अपने पाठकों की माँगों को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ परिस्थितियों के चलते कुछ माह पहले हमने अपनी प्रादेशिक पत्रिका का आकार बदला था। आप, यानि हमारे माननीय पाठक इससे बहुत खुश नहीं थे, इसलिये हमने तय किया है कि इसका आकार अंग्रेजी और जूनियर चन्दामामा के आकार के समान कर दिया जाए। पत्रिका का आकार बदलने से यह पाठकों के लिये और सुविधाजनक हो जाएगी। हमें पूरी उम्मीद है कि यह आपके चेहरे पर एक मुस्कान लाएगी।

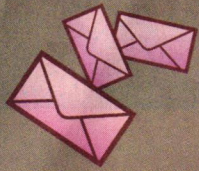
संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष २०१३ को अंतर्राष्ट्रीय जल सहकारिता वर्ष घोषित किया है। इस वर्ष का उद्देश्य अधिक सहयोग के लिये और पानी की अधिक माँग के परिप्रेक्ष्य में पानी के प्रबन्धन के समक्ष चुनौतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

जब तक हमारे नलों में पानी है, हमें पानी की तंगी के बारे में बहुत चिन्ता नहीं है। लेकिन चेत जाइये। बहुत जल्द, हमारे नल सूख जाएँगे। अपने मित्रों व रिश्तेदारों से इस बारे में बात करें। पता लगाएँ कि पानी के बिना जीवन कितना मुश्किल हो जाता है। पानी की कोई सीमा, राष्ट्रीयता या धर्म नहीं होता। नदियाँ, समुद्र और सागर राज्यों, देशों और यहाँ तक कि महाद्वीपों तक विस्तृत हैं। पानी का एक बड़ा स्रोत, सिन्धु नदी, हिमालय से निकलती है और भारत, पाकिस्तान और तिब्बत से होती हुई लाखों लोगों की जीवनरेखा बनती है। जब हम आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग करते हैं या उसे बर्बाद करते हैं, तो हम अपने संसाधनों से पानी की मात्रा कम कर रहे हैं। इससे या तो सीधे आप, या फिर कोई और सीधे इसकी कमी का सामना करेगा और इसी प्रकार किसी और के पानी की अधिक मात्रा का उपयोग करने पर आप इसकी कमी का सामना करेंगे। जल सहकारिता का अर्थ केवल इतना है कि आप उन दूसरों के बारे में सोचें जो आपके शहर, राज्य या यहाँ तक कि देश में भी रहते हैं और कुछ जल उनके लिये बचाएँ। बदले में वे भी आपके लिये ऐसा ही करेंगे।

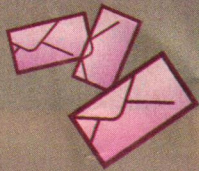
हमें हर उस वस्तु का हिसाब रखना चाहिये जिसका हम उपयोग कर रहे हैं, और जैसे ही हमें लगे कि हमने उसका अधिक उपयोग कर लिया है, हमें तुरन्त उपयोग बन्द कर देना चाहिये। यह विशेषकर उन वस्तुओं पर लागू होता है, जो हमें प्रकृति से प्राप्त होती हैं, क्योंकि वह हममें से किसी की भी सम्पत्ति नहीं हैं। प्रकृति प्रदत्त उपहार मानवता के लिये निशुल्क हैं, और उनमें जीने के लिये सबसे अधिक आवश्यक, पानी, एक बेहद कीमती तोहफ़ा है।

- सम्पादक





पाठकों के पत्र



यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि अंग्रेजी चन्दामामा का नया अंक त्रिवेन्द्रम में पहले ही सप्ताह में आ गया। पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। भागवत् गीता की शिक्षाओं को प्रादेशिक चन्दामामा में भी शामिल किया जाना चाहिये। सन् २००५ में कन्नूर में काम करते समय मुझे पुस्तकों की एक दुकान पर मार्च २००० की मलयालम चन्दामामा की प्रति मिली जिसे मैंने बहुत सम्भाल कर रखा है क्योंकि बहुत सी कहानियाँ और चित्रों से युक्त वह बहुत अच्छी है। चन्दामामा में मेरी रुचि के कारण दुकानदार ने मुझसे उसके पैसे भी नहीं लिये। सम्भव हो तो कृपया प्रादेशिक चन्दामामा का आकार बढ़ा दें।

- प्रसाद, त्रिवेन्द्रम

मुझे चन्दामामा से प्रेम है! यह अविश्वसनीय रूप से शानदार है। हमारे परिवार में सभी परिवारजन चन्दामामा के प्रशंसक हैं। स्कूल में, कहानी सुनाने के सत्रों में, मैं आगे बढ़कर भाग लेती हूँ और मुझे अपने मित्रों और शिक्षकों से शाबासी मिलती है। इसका कारण यह है कि मैं चन्दामामा पढ़ती हूँ। अपने जीवन में मूल्यों की वृद्धि के लिये मैं चन्दामामा का शुक्रिया अदा करती हूँ।

- सीमा, हैदराबाद

मैं पिछले १० वर्षों से चन्दामामा पढ़ रही हूँ। यह वास्तव में एक बहुत मनोरंजक पत्रिका बन गई है। चन्दामामा बहुत लम्बे समय से हमारे परिवार का हिस्सा है। मुझे सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लेना अच्छा लेकिन बड़ा मुश्किल भी लगता है।

- आरती अय्यर, एर्नाकुलम

हमारा परिवार चन्दामामा का नियमित पाठक है। इसकी कहानियाँ बेहद शानदार हैं। पत्रिका में चूँ-चूँ का डिब्बा कई भाषाएँ सीखने में मेरी मदद करता है। मुझे धारावाहिक और बीरबल की कहानियाँ पढ़ना अच्छा लगता है। हमें इतनी अच्छी पत्रिका देने के लिये धन्यवाद। यह पत्रिका न सिर्फ बच्चों, बल्कि बड़ों के लिये भी है।

- रेशमा, औरंगाबाद

मैं १९६७ से चन्दामामा का नियमित पाठक हूँ। चन्दामामा का २०१२ का नया रूप मुझे मेरे बचपन की ओर ले गया। मेरे लिये प्रत्येक अंक विशेष है। मेरे बच्चे अब भी चन्दामामा के पुराने अंक पढ़ते हैं। उन्होंने मुझे चन्दामामा के बारे में निम्न बात कही।

हमने देखा है कि रामायण श्रृंखला की कहानियाँ एक साथ एक पुस्तक में थीं। मेरा सुझाव है कि आप पुरानी कहानियाँ भी एक पुस्तक के रूप में निकालिये। मुझे विश्वास है कि इसे पाठकों का अच्छा प्रतिसाद मिलेगा और मैं इसका इन्तज़ार करने वाला पहला शख्स रहूँगा।

- सुनील एम सकळकाळे



ایکشن
ڈیٹر جینٹ پائوڈر

कपड़ों का विश्वास
इसमें है कुछ खास...



Manufactured by : **RAJA CHEMICAL INDUSTRIES.**

403, F.I.E. Patparganj, Delhi - 110092 E-Mail : rajachemical@yahoo.com

For quality feed back call at **011-22143987**

For Trade Enquiry : S.S. Chauhan - 09810168488

Subscribe



Chandamama

Because stories make the world go round...

Avail the
loyalty bonus!

Chandamama Subscribers
will get flat 10% off on
subscription renewals!
(All Editions)

Chandamama is monthly magazine available in English and 11 regional languages.
Junior Chandamama is for children above 4 years and is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama: (Tick whichever is applicable):

- ☐ English ☐ Assamese ☐ Bengali
☐ Kannada ☐ Hindi ☐ Gujarati
☐ Malayalam ☐ Marathi ☐ Oriya
☐ Sanskrit ☐ Tamil ☐ Telugu
☐ Junior (Only in English)

Take Your Pick!	1 Year	2 Year	3 Year	4 Year	5 Year
English (₹ 30/- per copy)	₹ 360	₹ 645	₹ 915	₹ 1150	₹ 1350
You Save		₹ 75	₹ 165	₹ 290	₹ 450
Junior (₹ 20/- per copy)	₹ 240	₹ 430	₹ 610	₹ 765	₹ 900
You Save		₹ 50	₹ 110	₹ 195	₹ 300
Regional (₹ 25/- per copy)	₹ 300	₹ 540	₹ 765	₹ 960	₹ 1125
You Save		₹ 60	₹ 135	₹ 260	₹ 375

Annual Subscription Overseas: US \$40 for English Chandamama, US \$30 for Regional Languages,
US \$25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

Name:

Address:

City: State: Pin:

Date of Birth: Sex: Telephone: Mobile:

Email: Subscription Number (for renewals):

Gift Subscription to the following address:

Enclosed Cheque / DD* for Rupees: Cheque / DD No.:

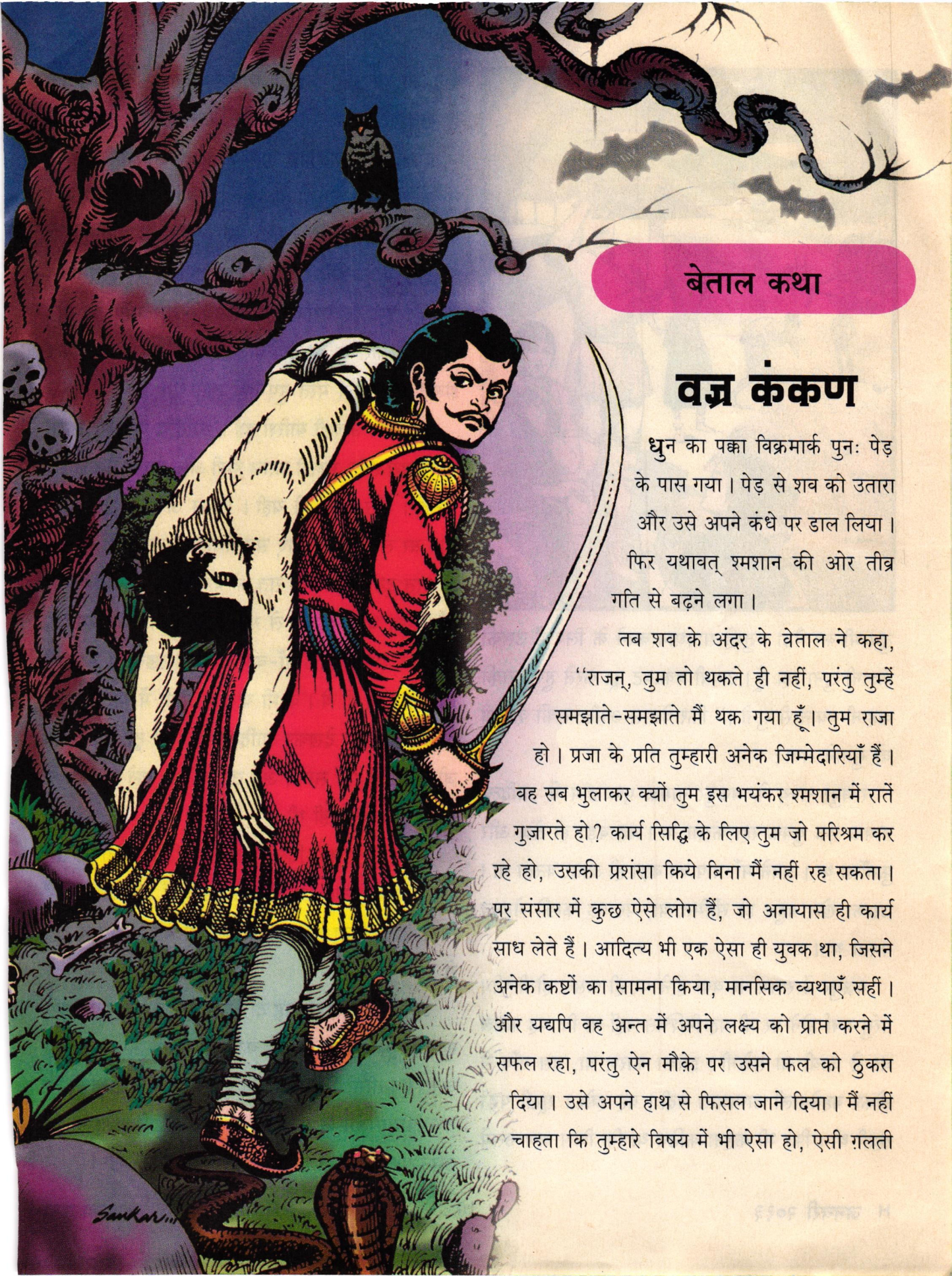
favouring Chandamama India Ltd on bank.

*Your subscription will commence in 6 weeks.

Please mail the subscription form to: **Chandamama India Ltd.**, P. O. Box No.: 19407, Mumbai-400093.

Email: customerhelp@chandamama.com | You can also subscribe online at: www.chandamamashop.com

**Conditions apply

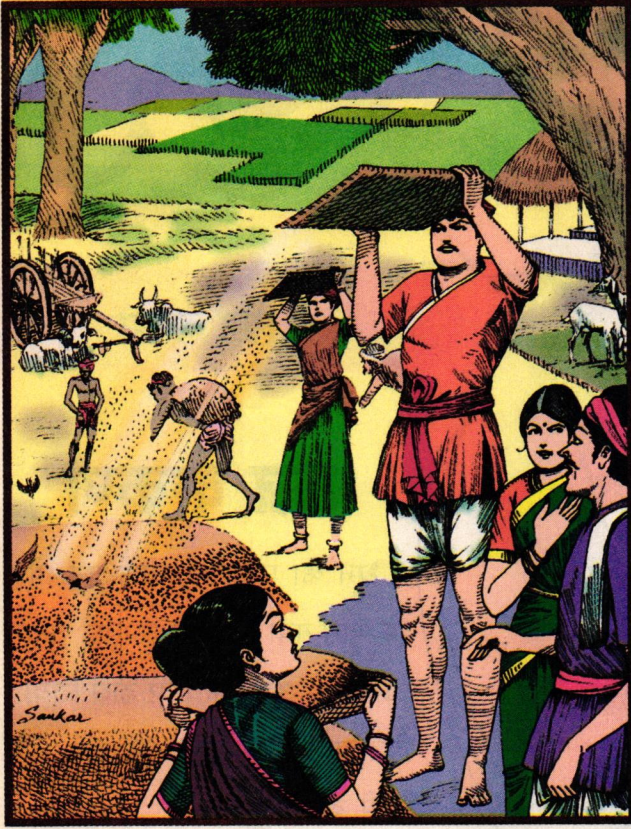


बेताल कथा

वज्र कंकण

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगा।

तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, “राजन्, तुम तो थकते ही नहीं, परंतु तुम्हें समझाते-समझाते मैं थक गया हूँ। तुम राजा हो। प्रजा के प्रति तुम्हारी अनेक जिम्मेदारियाँ हैं। वह सब भुलाकर क्यों तुम इस भयंकर श्मशान में रातें गुजारते हो? कार्य सिद्धि के लिए तुम जो परिश्रम कर रहे हो, उसकी प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता। पर संसार में कुछ ऐसे लोग हैं, जो अनायास ही कार्य साध लेते हैं। आदित्य भी एक ऐसा ही युवक था, जिसने अनेक कष्टों का सामना किया, मानसिक व्यथाएँ सही। और यद्यपि वह अन्त में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा, परंतु ऐन मौके पर उसने फल को ठुकरा दिया। उसे अपने हाथ से फिसल जाने दिया। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे विषय में भी ऐसा हो, ऐसी गलती



तुम भी कर बैठो। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं उसकी कहानी सुना रहा हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यान से सुनो।” फिर वेताल आदित्य की कहानी यों सुनाने लगा :

रत्नपुर राज्य के वज्रपुर नामक एक ग्राम में आदित्य नामक एक युवक रहा करता था। वह बड़ा ही तेज़ और फुर्तीला था। अपने माँ-बाप का बड़ा ही आदर करता था। उसका खेत बहुत ही सीमित था, पर वह काफ़ी मेहनत करता था।

वज्रपुर में समय पर वर्षा होने पर ही फसल होती थी। परंतु वर्षा होने पर भी यह निश्चित नहीं था कि वह फसल घर ले जायी जा सकेगी। इसका कारण था, उस गाँव से होकर बहनेवाली बाष्पधारा नदी। वह हमेशा सूखी पड़ी रहती थी। फिर भी कहना कठिन था कि किस क्षण उसमें

बाढ़ आ जायेगी। कहीं भारी वर्षा हो जाए तो अचानक ही बाढ़ का पानी गाँव को और खेतों को डुबो देता था।

ग्रामाधिकारी के द्वारा गाँव की प्रजा ने कितनी ही बार राज्य से विनती की थी कि एक बांध बांधा जाए और गाँव को बाढ़ के पानी से बचाया जाए। राजा के प्रतिनिधियों के द्वारा भी उन्होंने राजा से विनती की। पर दुर्भाग्यवश राजा ने इस पर ध्यान नहीं दिया। बेचारे गाँव के लोग गाँव छोड़कर जा भी नहीं पाते थे, इसलिए अकाल, कष्ट झेलते और भूखों मरते हुए वहीं रहते थे।

उस साल अच्छी बारिश हुई। आदित्य को पूरी आशा थी कि इस साल अच्छी फसल होगी और आराम से ज़िन्दगी कटेगी। और हुआ भी यही। फसल अच्छी हुई। उसने धान घर ले जाने के लिए सब तैयारियाँ कर लीं।

परंतु दुर्भाग्यवश उसी रात को बाष्पधारा नदी उमड़ पड़ी और सारा धान बहाकर ले गयी। गायों और बकरियों के साथ उस समय उसके माँ-बाप धान की रखवाली करने के लिए खेत पर ही थे। वे भी बाढ़ के पानी में बह गये।

इस दृश्य को देखकर आदित्य का दिल टूट गया। वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। अब उस गाँव में रहने की उसकी इच्छा बिलकुल नहीं थी।

विरक्ति ने उसके दिल में घर कर लिया। जीवन उसे निस्सार लगने लगा। उसकी सारी आशाएँ और आकांक्षाएँ मानों माता-पिता के साथ ही बाढ़ में बह गईं। वह वहाँ से चल पड़ा।

अन्यमनस्क होकर वह दो दिनों तक चलता रहा। उसे खुद मालूम नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है और उसे कहाँ जाना है। तीसरे दिन बरगद के एक पेड़ के नीचे थोड़ी देर तक विश्राम लेने के बाद जब वह निकलने ही वाला था कि उसने एक झाड़ी में चमकती हुई एक चीज़ देखी।

उसने उसे झाड़ी से निकालकर देखा। वह एक वज्र कंकण था। उस पर राजमुद्रिका भी थी। उसने उसे कपड़ों में छिपा लिया।

उस दिन की शाम तक राजधानी की सीमा पर स्थित शशांकपुर नामक शहर में पहुँचा। वहाँ एक राज प्रतिनिधि घोषणा कर रहा था, “लोगों को यह आखिरी चेतावनी है। महाराज की राजमुद्रिका लौटायी न गई तो फांसी की सज़ा सुनायी जायेगी। कल तक राजमुद्रिका राजा को सौंपिये और पुरस्कार पाइये।”

आदित्य ने वहाँ के लोगों से तत्संबंधी विवरण जानना चाहा।

उसे तब मालूम हुआ कि राजा का वज्रकंकण गायब है। पीढ़ी दर पीढ़ी से उनके पूर्वज इस वज्रकंकण को डालते आ रहे हैं। इसलिए राजा की दृष्टि में उसका बहुत मूल्य है। इसीलिए उन्होंने घोषणा करायी कि पूर्णिमा के पहले इसे जो सौंपेगा, उसे इनाम दिया जायेगा।

अगर समय पर यह सौंपा न गया तो बाद में जो आदमी पकड़ा जायेगा, उसे फांसी पर चढ़ाया जायेगा।

आदित्य दो दिन और वहीं रुक गया और तीसरे दिन राजधानी पहुँचा। वहाँ दरबार में पहुँचकर राजा के दर्शन किये और भरी सभा में वज्रकंकण उनके सामने रखा। उसे देखते ही राजा बेहद खुश हुआ। उसकी आँखें चमक उठीं। आश्चर्य से देखते हुए उसने आदित्य से पूछा, “यह तुम्हें कब और कहाँ मिला?”

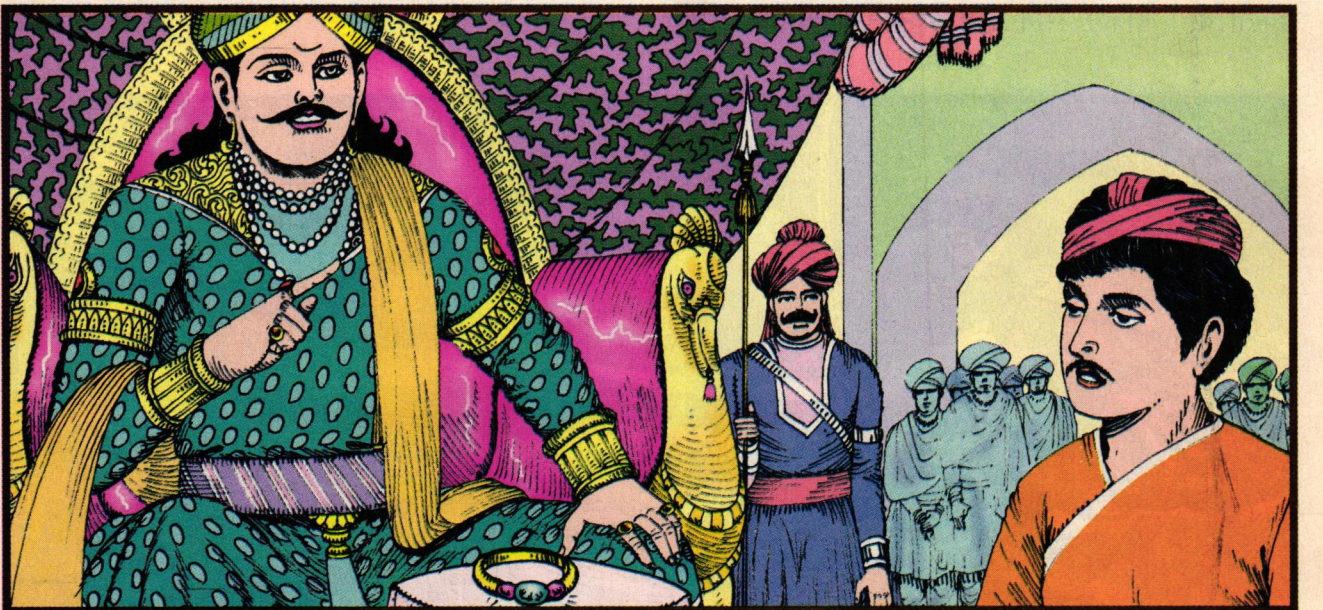
“तीन दिनों पहले शशांकपुर के निकट एक झाड़ी में मुझे यह मिला।” आदित्य ने कहा।

“तो उसी दिन मेरे सुपुर्द क्यों नहीं किया? तुम्हें इनाम मिल जाता।” राजा ने पूछा। आदित्य चुपचाप खड़ा रहा। “क्या जानते हो, पूर्णिमा के बाद जो कंकण लाकर देगा, उसे क्या सज़ा सुनायी जायेगी?” कड़वे स्वर में राजा ने पूछा।

“हाँ।” सिर हिलाते हुए आदित्य ने कहा।

राजा थोड़ी देर तक आश्चर्य भरे नेत्रों से आदित्य को देखता रहा। फिर सिंहासन से उतरा और बड़े ही प्यार से उसे गले लगाया। फिर कहा, “जो माँगना है, माँगो।”

आदित्य ने राजा को प्रणाम करते हुए कहा, “महाराज,



आपके राज्य के दक्षिणाग्र में स्थित वज्रपुर गाँव का निवासी हूँ मैं। उस गाँव की जनता बाष्पधारा नदी की वजह से दुखी है। उन सब ने कई बार नदी में बांध बंधवाने के लिए आपसे विनती की। लेकिन उनका दुःख दर्द आपके राज्य के अधिकारियों द्वारा आप तक पहुँचाया नहीं गया। आज तक उस अभागे गाँव के लिए आपकी ओर से कुछ भी नहीं किया जा सका।”

फिर उसने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि कैसे बाढ़ में सारे परिवार और अनाज के बह जाने से वह विक्षिप्त होकर लक्ष्यहीन-सा घर से निकल पड़ा और राजा के दरबार में आ पहुँचा।

“आपके राज्य का नागरिक होने के नाते अब मैंने अपना कर्तव्य निभाया है। राजा होने के नाते आपका फर्ज है, बांध बंधवाना। मुझे जाने की अनुमति दीजिए।”

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, “राजा ने कंकण को लौटाने के लिए जो अवधि तय की थी, उसके बाद ही आदित्य ने कंकण राजा को सौंपा। यह उसके लिए सुअवसर था। वह कुछ भी माँग सकता था। लेकिन उसने बांध बंधवाने व गाँव के लोगों

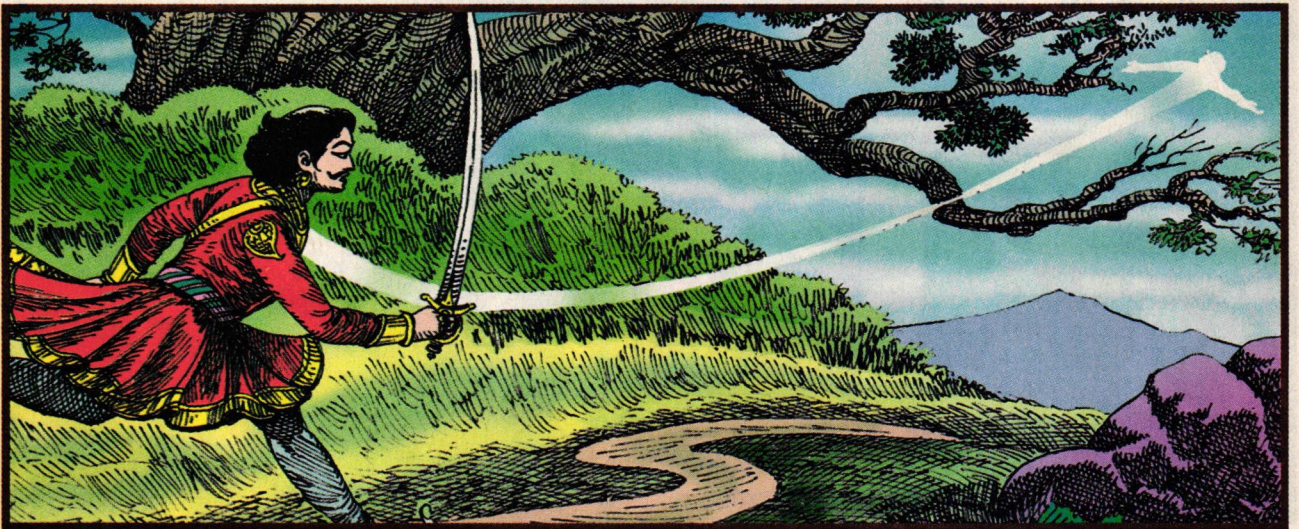
को सुविधाएँ प्रदान करने की ही अभ्यर्थना की।”

“जान-बूझकर उसने यह अवसर अपने हाथ से फिसल जाने देने क्यों दिया? इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी यदि तुम चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।”

विक्रमार्क ने कहा, “आदित्य ईमानदार है। उसे अपने श्रम पर पूरा विश्वास है। कंकण सौंपकर कोई इनाम पाने की उसकी इच्छा नहीं थी। इसी कारण राजा की निर्णय अवाधि के बाद ही कंकण सौंपने गया। उसकी दृष्टि में इनाम का कोई महत्व नहीं था। इसीलिए अपने लिए कुछ न माँगकर जनता की भलाई के लिए उसने राजा से बांध बंधवाने की विनती की। यह इस बात का गवाह है कि वह अपने गाँव को, अपने जन्म-स्थान को कितना चाहता है और उसमें उपकार बुद्धि कितनी भरी पड़ी है।”

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

- मंजु भार्गवी



अनमोल-उपहार

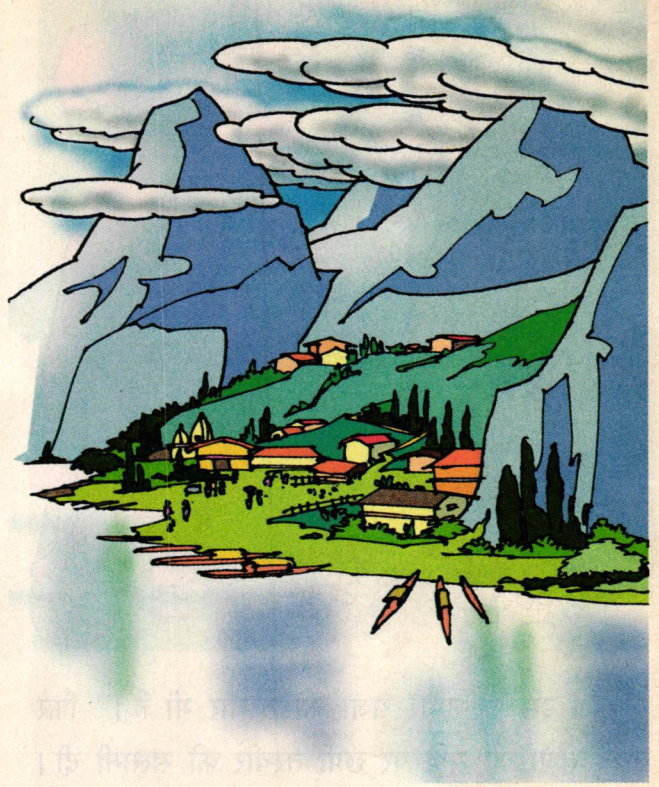
हिमालय के ऊँचे पहाड़ों के बीच बसा है एक छोटा सा गाँव। यह गाँव तीन तरफ से दुर्गम भू क्षेत्र से घिरा है तथा इसके चौथी ओर एक विशाल झील है। इस गाँव तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता झील को पार करके होता है और वह भी अधिकतर संभव नहीं होता जब झील में बर्फ जमी होती है। जो भी हो, गाँव अपने आप में पर्याप्त आत्म निर्भर तथा परिपूर्ण था। उनके पास अपनी आवश्यकता का सब कुछ था, और जो कुछ न होता उसे वे अदला-बदली के द्वारा (परस्पर-विनिमय-पद्धति के अनुसार) प्राप्त कर लेते।

साल में आठ महीने तक झील के जमे रहने से यह गाँव बाकी पूरे देश से बिल्कुल कट सा जाता था। चूँकि वे आपसी व्यापार या लेन-देन केवल वस्तुओं में करते थे अतः गाँववालों ने कभी पैसों का लेन-देन नहीं किया था, न ही उनके पास पैसा होता था। और तो और १९वीं शताब्दी में इन गाँववालों ने एक सिक्का तक नहीं देखा था, यहाँ तक कि उन्होंने इसके बारे में सुना भी नहीं था।

ऐसे में कल्पना कीजिए गाँव के उस हो-हुलड़ की, जब एक उजली सुबह एक ग्रामवासी ने चाँदी का एक सिक्का पड़ा देखा। दरअसल ऊपर उड़कर जाती हुई किसी चिड़िया ने गलती से वह सिक्का गिरा दिया होगा। सिक्के पर एक तरफ उनके राजा का चेहरा था तथा दूसरी तरफ शाही मुहर। गाँववालों को समझ नहीं आ रहा था कि उसका क्या किया जाए।

“इसे नम्बरदार के पास ले जाओ, उसे पता होगा कि इसका क्या करना चाहिए।” कुम्हार ने कहा।

“हाँ, उसे कुछ नया तरीका मालूम होगा कि इससे क्या किया जाए।” दूसरा मछुआरा बोला।



अतः गाँववाले उसे नम्बरदार (गाँव का मुखिया) के पास ले गए, जो गाँव का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति समझा जाता था। वह सिक्का देखकर अचंभित रह गया। इस चमकदार गोल धातु के आकस्मिक आगमन ने सारे गाँव में उत्तेजना और व्याकुलता फैला दी थी। वे सब गाँव के चौबारे में एकत्र हुए और इसके बारे में विस्तार से विवेचना करने लगे। अंत में उन्होंने ने तय किया कि अगले दिन नम्बरदार इसका समाधान प्रस्तुत करेगा।

नम्बरदार ने इस समस्या पर विचार किया। उसने पूरा दिन बेचैनी और रोत्र निद्राविहीन बिताई। अन्ततः नम्बरदार अपने निश्चय के साथ उपस्थित हुआ।

वह एकत्र भीड़ के सामने आकर विस्तार से बोला। “मित्रो, उसने कहा, “यह पहला सिक्का है जो हम देख



रहे हैं। इस पर हमारे राजा की तस्वीर भी है।” फिर उसने राजा की सक्के पर छपी तस्वीर को सलामी दी। “ईश्वर हमारे राजा को समस्त प्रकार की समृद्धि और सफलता प्रदान करे।”

गाँववाले सर्वसम्मति से नम्बरदार के निर्णय से सहमत थे। अब वे इस बात पर विचार करने लगे कि महाराज को भेंट प्रदान करने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा।

नम्बरदार ने फिर आगे बढ़कर अपनी राय दी। उसने कहा कि इस प्रकार की भेंट को एक सजी हुई पालकी में रखकर छः बड़े लोगों के द्वारा ले जाया जाना चाहिए, जिन्हें नम्बरदार के द्वारा चुना जाएगा।

अतः गाँववाले पालकी बनाने में एक साथ जुट गए। लकड़हारे ने सर्वोत्तम लकड़ी काटी। बढ़ई ने इस लकड़ी पर काम शुरू किया और एक सुन्दर पालकी तैयार की। कालीन बनानेवालों ने एक ऊनी कम्बल बुना और

जुलाहों ने सिल्क का आवरण बनाया जिस पर औरतों ने कढ़ाई की और उसे पालकी के ऊपर डाल दिया गया। ऊनी कम्बल को पालकी के अन्दर सावधानी से बिछाया गया। सिक्रे को इस प्रकार रखा जा रहा था मानो वह कोई नवविवाहिता दुलहन हो जिसे उसके पति के यहाँ ले जाया जा रहा हो।

पालकी को झील के पार उतारने के लिए एक नाव तैयार रखी गई थी। औरतों के द्वारा अपने राजा की सफलता के गीत गाते हुए पालकी को नाव तक लाया गया। पालकी को फूलों से सजाया गया था और आवश्यकता की हर वस्तु रखी गई जो लम्बी यात्रा के लिए होनी चाहिए। पालकी को बहुत सावधानीपूर्वक नाव में रखा गया। गाँववालों ने हाथ हिलाकर विदा किया। बदले में नाव में खड़े नम्बरदार ने भी हाथ हिलाया।

पालकी को सम्मानपूर्ण जगह दी गई और उसका ध्यान भी श्रद्धापूर्वक रखा गया। कोई उसकी तरफ पीठकर नहीं बैठा या खड़ा हुआ। उन्होंने शामको एक लैम्प जलाया और रात भर उसे सुबह होने तक उसे जलाए रखा। उनमें कोई एक रात भर रखवाली के लिए जागता रहा। जब वे दूसरी नावों के पास से गुजरते तो देखनेवाले उत्सुकता से पालकी के बारे में पूछते। किन्तु गाँववाले उन्हें सिर्फ इतना बताते कि वे एक अनमोल उपहार राजा के लिए ले जा रहे हैं। उन्होंने उपहार के स्वरूप को प्रकट नहीं किया।

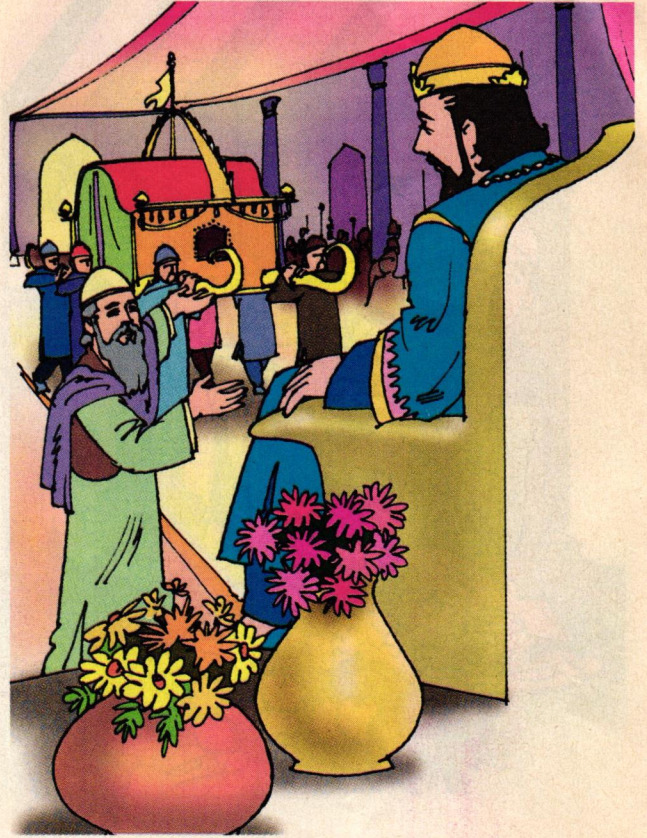
तीसरे दिन की सुबह वे राजधानी पहुँच गए। नदी के तट पर गाँव के गुरुजनों ने पालकी को कन्धे पर उठाया। अपनी श्रद्धा के प्रतीक रूप में उन्होंने चप्पलें भी उतार दीं। उन्होंने एक स्कार्फ का हिस्सा अपनी पीठ पर बाँध लिया जैसे पुराने सभासद बाँधते थे। उनमें से चार ने पालकी उठाई और एक राजकीय झण्डा उठाए उनके आगे आगे चला। नम्बरदार पालकी के पीछे विनम्र भाव से हाथ जोड़े चला।

वे सभी बहुत प्रसन्न थे, मानों वे एक बहुत मूल्यवान उपहार अपने राजा के लिए ले जा रहे हैं। आने जानेवाले उनके आगमन और आनन्द भाव से बहुत प्रभावित हो रहे थे। नगर के मुख्य द्वार पर कर-अधिकारी देखना चाहता था कि पालकी में क्या है। किन्तु नम्बरदार ने विरोध करके दिखाने से मना कर दिया और कहा, “सर्व प्रथम इसे राजा ही देखेंगे, और किसी को झांकने भी नहीं देंगे।” जब अधिकारी को लगा कि गाँववाले उन्हें हरगिज नहीं देखने देंगे तो उसने छोड़ दिया, और उन्हें नगर के अन्दर जाने दिया।

महल तक पहुँचने के पहले मुख्य रास्ते पर एक छोटा सा जुलूस जा रहा था। चारों तरफ यह खबर जंगली आग की तरह फैल गई कि कुछ सीधे-सादे ग्रामवासी पालकी में राजा के लिए उपहार लेकर आ रहे हैं। रास्ते में देखनेवालों की भीड़ लग गई, वे पालकी और उसके गुप्त उपहार को देखने के लए उत्सुक थे।

जब गाँववाले महल पहुँच गए तो उन्होंने पहरेदारों से अपने आने का उद्देश्य बताया। राजा ने पहरेदारों से कहा कि उन्हें अन्दर प्रवेश करने दें और उनसे अपने निजी मेहमानों सा बर्ताव किया। उनके अतिथि-सत्कार ने गाँववालों को भावविभोर कर दिया। उन्होंने राजा की भरपूर प्रशंसा की। जब वे महल के अन्दर गए, उन्होंने पालकी को पूरा सम्मान दिखा दिया। महल के सदस्य उत्सुक थे किन्तु उपहार के बारे में पूछने का साहस न कर सके, कहीं गाँववाले स्वयं अपमानित न महसूस करें।

इस बीच गाँववाले गर्व में डूबे थे, ऐसा आतिथ्य उन्होंने कभी न देखा था। “राजा पर हमारा उपहार देखकर कैसी प्रतिक्रिया होगी? उन्हें हमारे लिए क्या पारितोषक ठीक लगेगा?” नम्बरदार ने जानना चाहा। गाँव के बड़े अपने-अपने विचार के साथ आगे आए। राजा ने अपने मध्याह्न के आराम के पश्चात गाँववालों को बुलाया।

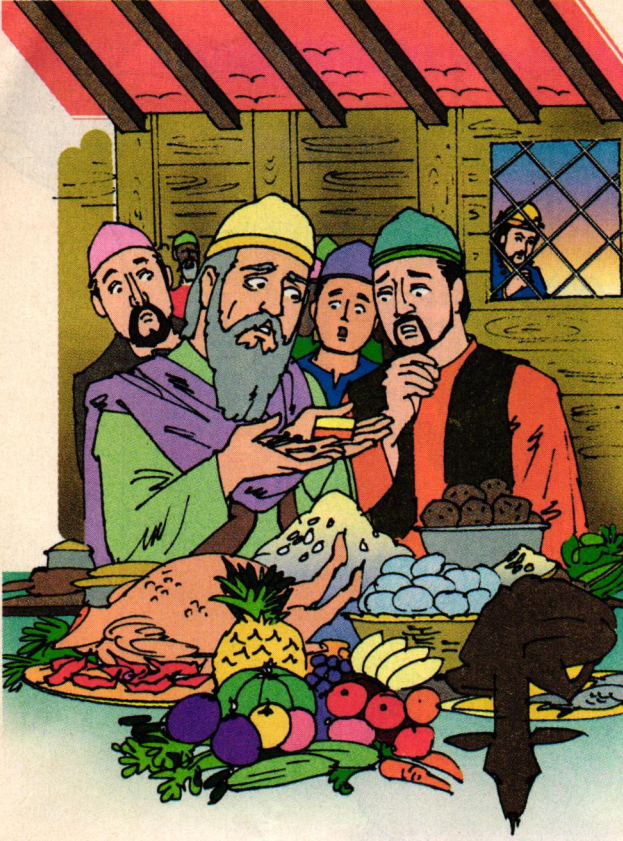


सभा में प्रधानमंत्री तथा अन्य सम्मानित लोग उपस्थित थे। नम्बरदार ने अन्दर प्रवेश किया और सम्मानपूर्वक अभिवादन किया। दूसरों ने पालकी को फर्श पर रखा और सम्मान में खड़े हो गए।

तब नम्बरदार ने राजा को संबोधित किया, “माननीय राजन् हम लोग आपके राज्य की झील के सुदूर गाँव से आए हैं। मैं और मेरे साथ हमारे गाँव के ये गुरुजन आपको एक अनोखा उपहार भेंट करना चाहते हैं। हमने इस सारी दूरी को केवल अपने कर्तव्य भाव से प्रसन्नतापूर्वक तय किया है। मेरा आपसे निवेदन है कि आप हमें हमारी विनम्र भेंट को आपके सम्मानीय चरणों में रखने की आज्ञा दें।

“अच्छे लोग हैं। मैं तुम्हारी राजभक्ति से प्रभावित हूँ। जो कष्ट उठाकर तुम लोग यह भेंट इतनी दूर से लाए हो, अब वह मुझे दे सकते हो।”

तब नम्बरदार ने पालकी से परदा उठाया और अपना



हाथ पालकी के अन्दर डाला। उसने आसपास टटोला और एकदम से हैरान हो गया। फिर उसने चारों परदे उठाए और अन्दर खोजा।

उसने अपने बड़े लोगों को बुलाया और उनके कान में कुछ कहा।

बड़े लोग भी पालकी के चारों तरफ जमा हो गए पर कुछ न मिला। उन्होंने पूरी तरह से पालकी छान मारी पर कहीं भी कीमती उपहार न मिला।

प्रधानमंत्री अधीरता से बोला, “तुम लोगों को और कितना समय लगेगा, गँवारो? राजा को अन्य कई महत्वपूर्ण काम भी देखने हैं।”

गाँववाले इस बारे में कुछ न कर सके। अपनी उत्सुकता में वे पालकी को इस प्रकार उठाते रहे कि सिकका कहीं गिर गया।

प्रधानमंत्री गाँववालों को राजा के अपमान हेतु दण्ड देना चाहता था। उसने राजा से कहा कि उन्हें जेल में फेंक दिया जाए।

“महाराज, हम आपका अपमान करने की बात सोच भी कैसे सकते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आपको सब घटना चक्र बताने की अनुमति दी जाए।” नम्बरदार ने कहा।

राजा को लगा कि ये गाँव के लोग सरल और निष्ठावान हैं जो उसे कुछ भेंट करना चाहते थे, न कि उसका अपमान, किन्तु वह उनकी सरलता की परीक्षा भी करना चाहता था।

उसने आदेश दिया कि उन्हें एक कमरे में रखा जाए और उन्हें सारी सामग्री देकर अपना भोजन बनाने की आज्ञा दी। उन्हें जलते कोयले की जगह माचिस दी गई। बेचारे गाँववासी जानते ही नहीं थे कि उसे कैसे जलायी जाये, और उन्होंने जो कुछ खा सकते थे कच्चा ही खा लिया।

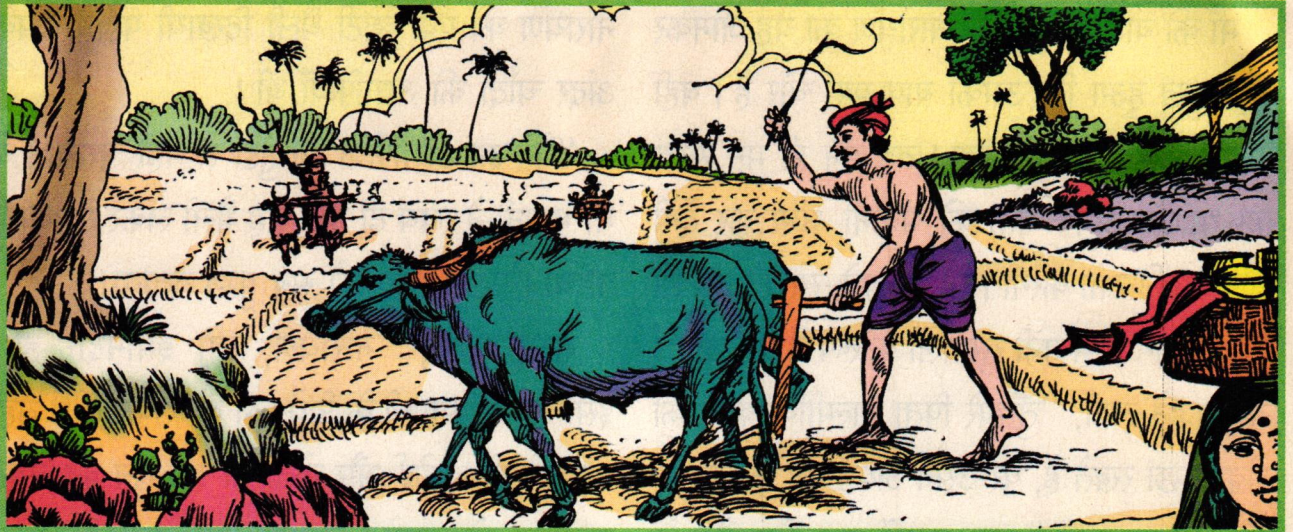
जब राजा ने यह सुना तो उसे उनके भोलेपन पर विश्वास हो गया।

उसने उनकी पूरी कथा सुनी। वह उनकी निष्ठा पर दिल खोल कर हँसा। उसने नम्बरदार को चाँदी का एक सिकका दिया और उससे पुनः ग्रहण किया।

“अब तुम लोगों की भेंट मेरे द्वारा स्वीकार कर गई है।” राजा ने कहा।

राजा ने उन्हें उचित उपहार भेंट किए और उनके गाँव की भूमि का ‘कर’ और किराया भी कम दिया। महल से जाते समय गाँववालों ने राजा का खुले हृदय से धन्यवाद किया।

जब ये ग्रामवासी अपने गाँव पहुँच गए, उन्होंने यह कथा सुनाई कि किस प्रकार वे कैदखाने में बन्द होने से बच गए।



भवानी का अनुग्रह

भवानीपुर में बुक्का नामक एक चोर रहा करता था। पर वह हमेशा चोरी नहीं करता था। जब मज़दूरी मिलती, काम करता था। वह शादी शुदा था और उसका एक बेटा भी था। उसकी पत्नी जानती थी कि वह चोरी भी करता है, पर उसके बेटे को यह राज़ मालूम न था।

बुक्का चोरी पर जाने के पहले भवानी के मंदिर में प्रार्थना करता था, “माँ, ज़रूरत पड़ने पर ही मैं चोरी करता हूँ। मेरी आमदनी का चौथा हिस्सा तुम्हें भेंट के रूप में देता आ रहा हूँ। मुझे हर खतरे से बचाना।”

बुक्का एक बार चोरी करने शहर गया। उस समय रंगमंच पर वाल्मीकि महर्षि नाटक प्रदर्शित हो रहा था। वाल्मीकि महर्षि का पहला नाम भी बुक्का था। उसने बड़े ध्यान से पूरा नाटक देखा। इस बात पर

उसे अचरज होने लगा कि चोर बुक्का वाल्मीकि बना और उसने रामायण रची।

“माँ भवानी, यह मेरी आखिरी चोरी होगी। फिर मैं पंडितों के पास विद्याभ्यास करूँगा और एक ग्रंथ लिखूँगा। इस बार मुझे ज्यादा से ज्यादा माल मिले, बस, इतना अनुग्रह मात्र करना।” मन ही मन यों उसने प्रार्थना की। परंतु इस बार चोरी करते हुए वह पकड़ा गया। उसे जेल में डाल दिया गया।

बहुत दिनों के बाद भी बुक्का जब वापस नहीं लौटा तब उसकी पत्नी अपने बेटे नारायण को लेकर भवानी के मंदिर में गयी। उसने भवानी से कहा, “माँ, मानती हूँ कि मेरा पति चोर है, परंतु वह तुम्हारा भक्त है। अमीर बनने या भवन बनाने के लिए उसने चोरियाँ नहीं कीं। गरीबी ही उसकी चोरी की वजह है।” कहती हुई वह रोने लगी।

माँ की बातों को सुनकर नारायण को यह जानकर बहुत दुख हुआ कि उसका बाप एक चोर है। वहीं मंदिर के मंडप में बैठा रहा। वह मन ही मन सोच रहा था कि अपने भक्त को भवानी क्षमा कर देंगी और उसकी रक्षा करेंगी। यह सोचते-सोचते वह सो गया। सपने में भवानी सुमंगली के रूप में प्रत्यक्ष हुई और कहने लगी, “तुम्हारे पिता वाल्मीकि बनने की तीव्र इच्छा रखते हैं, पर उसने अपने मन के विकारों का परित्याग नहीं किया। उसमें राग, द्वेष जैसे के तैसे बने हुए हैं। परिवार की जिम्मेदारी संभालने के लिए वह चोरियाँ करता था, इसलिए मैंने उसे माफ़ कर दिया।”

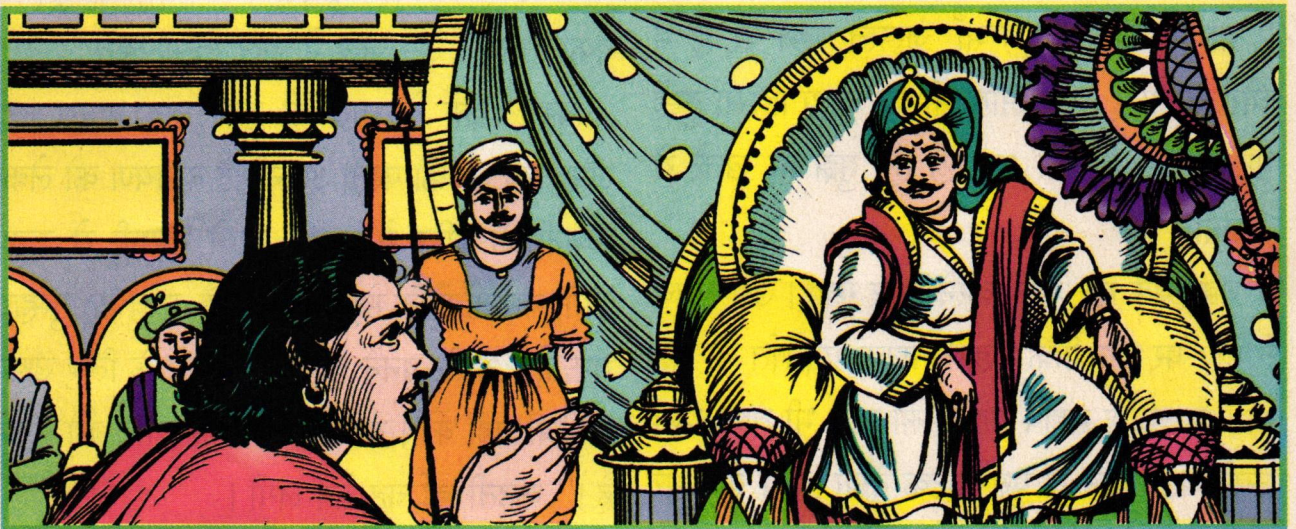
“माँ, अब माँ की देखभाल करना मेरा कर्तव्य है। साल भर मजदूरी करके पेट भरने के लिए काम नहीं मिलेंगे। कोई छोटा-सा व्यापार करके जी सकता हूँ पर मेरे पास धन नहीं है।”

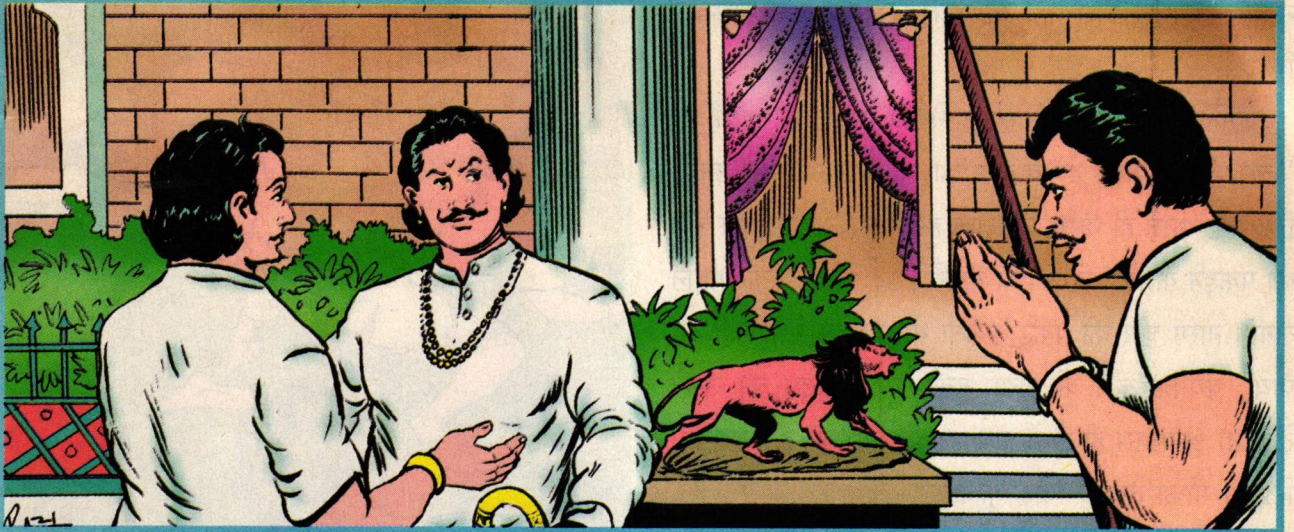
सुमंगली अदृश्य हो गयी। आँख खोलते ही

नारायण को एक छोटी थैली दिखायी पड़ी। उसके अंदर चाँदी की अशर्फियाँ थीं।

“मैंने इन अशर्फियों को हुँडी से नहीं चुराया। ये माँ भवानी ने स्वयं दी हैं।” वह थैली लेकर राजधानी पहुँचा। उसने राजा को सब कुछ बताया।

राजा बोला, “नारायण, तुम ईमानदार हो। इसीलिए माँ भवानी के दिये धन को लेकर सीधे यहाँ आ गये हो। कोई और होता तो इस धन को लेकर रफूचक्कर हो जाता। तुम्हारा बाप वाल्मीकि जैसा बड़ा आदमी बनना चाहता हो तो इसमें उसकी कोई ग़लती नहीं। पर इसके लिए उसने जो मार्ग अपनाया, वह ग़लत है। इसीलिए माँ भवानी ने एक तरफ़ उसे सज़ा दी और दूसरी तरफ़ उसपर अपना अनुग्रह भी दिखाया।” फिर राजा ने सैनिका को बुलाया और बुक्का को जेल से रिहा कर देने की आज्ञा दी। बाप और बेटा सुखमय जीवन बिता सकें, इसके लिए आवश्यक प्रबंध भी किया।





नमस्कार नारंग

नारंग को जमींदार के दीवान में नौकर का काम मिला। यह दशरथ की सहायता से संभव हो पाया। उसने नारंग को समझाया, “तुम अच्छे स्वभाव के हो, पर दूसरों का आदर करना नहीं जानते। जब-जब जमींदार तुम्हें दिखायी पड़ें, तुरंत उन्हें नमस्कार करना। किसी भी हालत में यह मत भूलना।”

नारंग ने अच्छी तरह से यह बात याद रखी। पहले दिन जैसे ही उसने जमींदार को देखा, सविनय नमस्कार किया। वे बहुत खुश हुए। वहाँ जो लोग उपस्थित थे, उनसे गुफ्तगू करते हुए फिर से उन्होंने नारंग को देखा। नारंग ने फिर से एक और बार उन्हें नमस्कार किया।

जमींदार उसके विनय पर बहुत प्रसन्न हुए और उसे कोई काम सौंपा। काम पूरा करने के बाद नारंग लौटा और फिर से नमस्कार करके कहा कि आपका बताया काम मैंने कर दिया।

यों, जमींदार जब-जब दिखायी पड़ते थे, वह बिना चूके अवश्य नमस्कार करता था। उसकी यह आदत-सी हो गयी। जमींदार किसी से बातें कर रहे हों और बीच में वे नारंग की ओर मुड़ें तो वह तुरंत फिर से नमस्कार करता था।

जमींदार उसके विनय से बहुत प्रभावित हुए और उसे

अपना अंगरक्षक बना लिया। तब से वह हमेशा यदि जमींदार आगे-आगे जा रहे हों तो वह उनके पीछे-पीछे ही आता था। उससे कोई बात कहने के लिए वे उसकी तरफ घूमते तो नारंग उन्हें नमस्कार करता था। सोचते समय जमींदार इधर-उधर टहलते रहते थे। यह उनकी आदत थी। नारंग वहीं खड़ा रहता था। जब जमींदार उसकी तरफ आने लगते तो फिर वह नमस्कार करता था।

एक बार जमींदार को गले में दर्द होने लगा। गले के दर्द को दूर करने के लिए वैद्य के कहे अनुसार वे अपने गले को बायीं और दायीं तरफ घुमाने लगे। उनकी दायीं तरफ ही खड़ा होकर, जब-जब जमींदार दायीं तरफ अपना सिर घुमाते थे, तब-तब नारंग नमस्कार करने लगा। नारंग के नमस्कारों के बारे में दीवान में सबको मालूम हो गया।

एक दिन जमींदार शहर को पास के खेतों की ओर जाने लगे। नारंग भी उनके पीछे-पीछे जाने लगा। थोड़ी दूर जाने के बाद एक चोर अचानक नारंग से टकराया, जिस वजह से वह नीचे गिर गया। चोर आगे बढ़ा और जमींदार की गले की सोने की जंजीर छीन ली। घबराकर उन्होंने मुड़कर देखा तो

नारंग ज़मीन पर गिरा पड़ा था। नारंग ने फिर उन्हें नमस्कार किया।

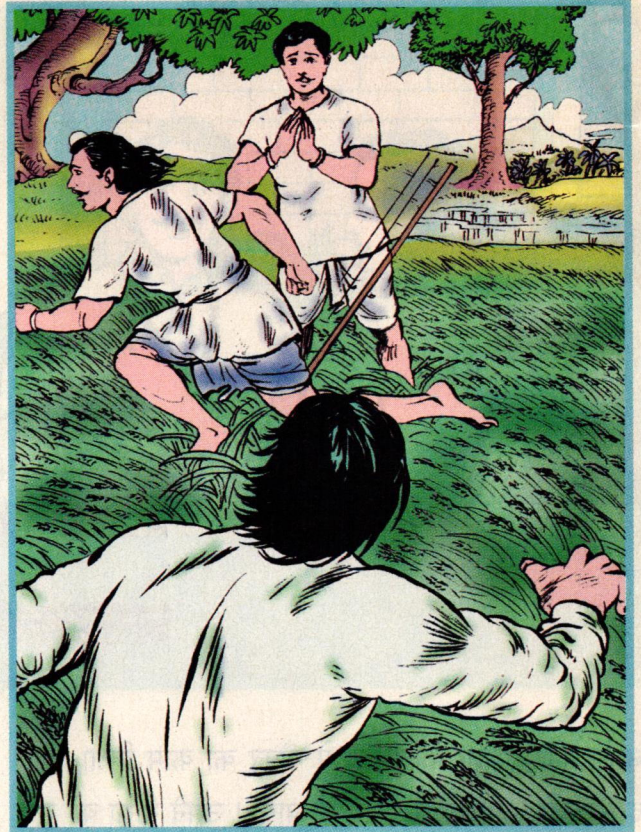
जमींदार ने देखा कि नारंग उठने की स्थिति में नहीं है तो “चोर, चोर” कहते हुए वे चोर का पीछा करने लगे। उनकी चिल्लाहट सुनते ही नारंग उठ खड़ा हुआ और दौड़ता हुआ चोर को पकड़ने के लिए दोनों हाथ बढ़ाये। पर, चोर बचकर भागने लगा। नारंग चोर को पकड़ सकता था, पर वह ऐसा नहीं कर पाया, क्योंकि चोर की तरफ बढ़ते हुए जमींदार को उसने देखा तो अनायास ही दोनों हाथ उठाकर जमींदार को नमस्कार किया। मौका देखकर चोर रफूचक़र हो गया।

जमींदार बहुत नाराज़ हुए। हाथ में आए चोर को छोड़ दिया। इसपर उन्होंने नारंग को दुत्कारा नारंग ने हाथ जोड़कर कहा, “सरकार, आपको नमस्कार किये बिना मैं नहीं रह सकता। इसी वजह से चोर बचकर निकला। आप ही बताइये, मेरा नमस्कार करना ग़लत था? आदत भुलाने की कोशिश करूँगा।”

“तुम्हारे नमस्कार की वजह से मैं सोने की जंजीर खो बैठा,” जमींदार ने क्रोधे स्वर में कहा। नारंग ने कहा, “मैंने चोर का चेहरा देख लिया। वह हमारे ही शहर का है। उसका नाम नहीं जानता। फिर देखूँगा तो अवश्य पहचान लूँगा। इसलिए आप मुनादी करवा दीजिए कि नारंग ने चोर को पहचान लिया है, वह चुपचाप जंजीर को लौटा दे तो बात आगे बढ़ायी नहीं जायेगी, नहीं तो असली चोर को पकड़ लेंगे और उसे कड़ी सज़ा दी जायेगी।

जमींदार को नारंग के कहे अनुसार मुनादी पिटवायी। दूसरे ही दिन जमींदार की सोने की जंजीर उनके पलंग पर पायी गयी।

जमींदार ने नारंग की सलाह की प्रशंसा करते हुए कहा, “मेरी जंजीर मुझे मिल गयी पर यह स्पष्ट है कि हमारे आस्थान के किसी आदमी से उसका परिचय है। किसी भी प्रकार से हो, उसे पहचानो और मुझे सूचित करो।”



एक क्षण तक सकपकाने के बाद नारंग ने कहा, “मालिक, मैंने सचमुच चोर का चेहरा नहीं देखा। इस बात पर मुझे दुख हुआ कि मेरी वजह से आपकी जंजीर की चोरी हो गयी और मुझे लगा कि भविष्य में नमस्कार करने की अनुमति आप मुझे नहीं देंगे। ख़ूब सोचा और इस उपाय को अमल में लाने का निर्णय लिया। मुझे मालूम है कि मैं चोर को पहचान नहीं सकूँगा पर चोर को यह कैसे मालूम होगा कि मैं उसे पहचान नहीं सकूँगा। वह डर गया होगा, इसीलिए उसने जंजीर लौटा दी।”

“तुम्हारे हाथ नमस्कार करना ही नहीं जानते बल्कि तुम्हारा दिमाग़ भी बड़ा पैना है। तुमने जब चोर को ठीक तरह से नहीं देखा, तब तुमने वह बात मुझसे क्यों छिपायी?” जमींदार ने पूछा।

“सरकार, आप मुझसे बहुत अप्रसन्न थे, उसपर मैं अगर कहूँ कि मैंने चोर को नहीं देखा, तो आप और क्रोधित हो उठते। अलावा इसके मेरे यह कहने पर ही आपने मुनादी करवायी कि

मैंने चोर का चेहरा देखा। अगर ऐसा नहीं करता तो आपको मेरे ऊपर विश्वास ही नहीं होता।” नारंग ने कहा।

जमींदार ने उसकी अक्लमंदी की तारीफ करते हुए कहा, “अब मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम पाकशाला में जाओ और रसोइये से बताओ कि मैंने दो प्रकार की मिठाइयाँ बनाने को कहा है।”

नारंग ने रसोइये से यह बात बतायी और उसने ‘हाँ’ कह दिया। फिर कहा, “गुलाब जामुन और जलेबियाँ बना चुका हूँ। कहो, कैसी हैं?” कहते हुए उसने एक जलेबी दी।

नारंग ने खाया और चकित रह गया, क्योंकि आज तक उसने ऐसी स्वादिष्ट जलेबी कभी नहीं खायी थी। एक और खाना चाहा, पर संकोचवश चुप रह गया। परंतु उसके लौटने के कुछ ही क्षणों के बाद जमींदार ने उसे फिर से पाकशाला में भेजा। रसोइये ने फिर से उसे एक जलेबी खाने को दी।

पता नहीं, जमींदार को उस दिन क्या हुआ, नारंग को लगातार पाकशाला भेजता ही रहा। जब-जब वह वहाँ गया, रसोइया उसे जलेबी खिलाता ही रहा। दस-बारह जलेबियों को खाते ही नारंग को उनसे चिढ़ हो गयी। उसने और जलेबियाँ खाने से इनकार कर दिया।

“इनकार मत करो। यह जमींदार का हुक्म है।” रसोइये ने कहा।

“लगातार मैं जलेबियाँ ही खाता जा रहा हूँ। कोई और स्वादिष्ट पकवान हो तो खिलाना।” नारंग ने रसोइये से कहा।

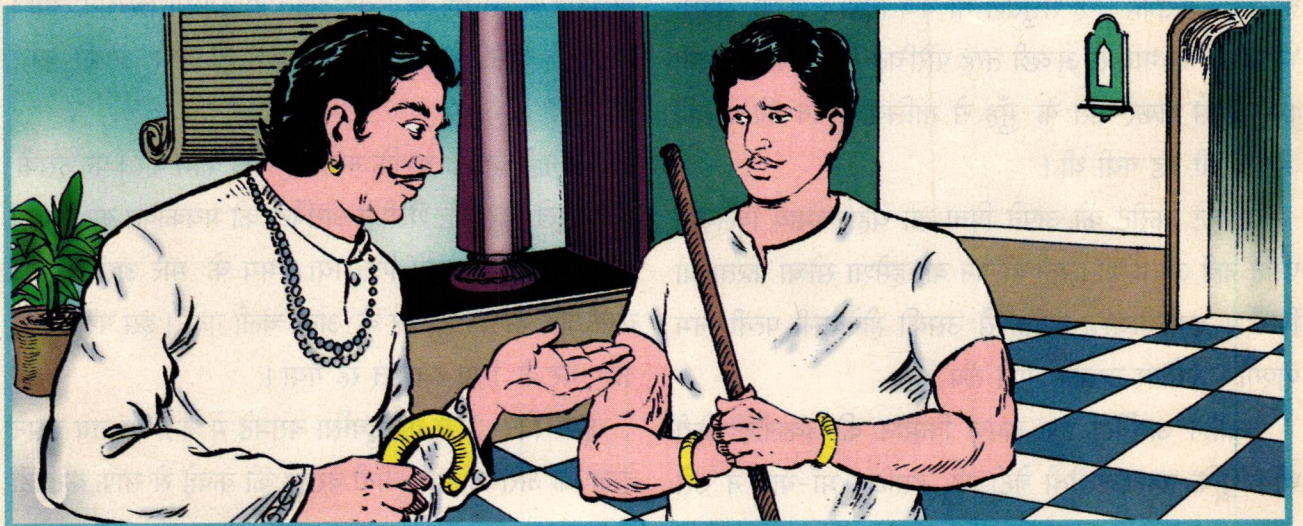
“जमींदार ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें केवल जलेबियाँ ही खाने को दूँ। कोई दूसरा पकवान खाना हो तो उनकी अनुमति लेकर आओ।” रसोइये ने कहा।

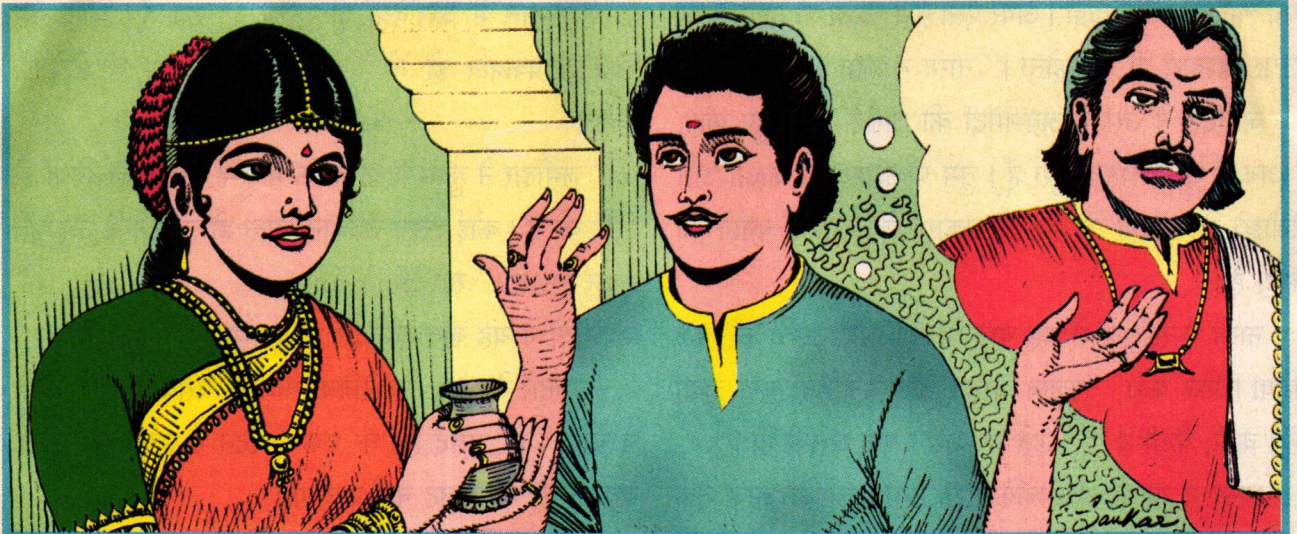
नारंग ने यह बात जमींदार से बतायी।

जमींदार ने कहा, “जलेबियाँ तो तुम्हें पसंद हैं न?” नारंग ने कहा, “हाँ, पसंद हैं। पर एक ही दिन में इतनी खा लूँ तो क्या उनसे मन उलट नहीं जायेगा?”

जवाब में जमींदार ने मुस्कुराते हुए कहा, “सुनो, तुम भी मेरे मन को प्रसन्न करने के लिए नमस्कार पर नमस्कार किये जा रहे हो। मुझे यह पसंद है। तुम्हारे पेट को खुश करने के लिए मैंने जलेबियों की व्यवस्था की, क्योंकि कि वो तुम्हें पसंद हैं। मन को या मनुष्य को हृदय से बढ़कर सदा किया जानेवाला कोई भी काम पसंद नहीं आता। उससे चिढ़ हो जाती है। मेरी बात समझ गये न?”

अब पूरी बात नारंग की समझ में आ गयी। उस दिन से वह जमींदार को एक या दो बार ही नमस्कार करने लगा और सीमा को लांघता नहीं था। पर जमींदार उसे नमस्कार नारंग कहते हुए थकते नहीं थे।





दुर्वासा की हँसी

सीतापुर का निवासी दुर्वासा उस गाँव के संपन्न लोगों में से एक था। उसके पुरखों ने उसके लिए काफी जायदाद बचा रखी थी। इस वजह से गाँव के लोग उसका आदर करते थे। उसका असली नाम रामचंद्र था, पर उसकी तुनकमिजाजी की वजह से लोग उसे दुर्वासा कहकर पुकारते थे। किसी पर वह नाराज़ हो जाए तो जो मुँह में आया, आगा-पीछा सोचे बिना बक देता था।

दुर्वासा के तीन बच्चे थे। दो बेटियाँ और एक बेटा। बेटियों की शादी कराकर उन्हें ससुराल भी भेज दिया। उसके संबंधी भी उसके स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे। अब रही पत्नी। सुबह से लेकर पति के मुँह से गालियाँ सुनने की उसकी आदत-सी पड़ गयी थी।

पर बेटे किरिट को अपने पिता का यह स्वभाव बिल्कुल पसंद नहीं आता था। मन ही मन वह हमेशा सोचा करता था कि इस तुनकमिजाज व्यक्ति से उसकी होनेवाली पत्नी निभ पाएगी? आखिर उसकी शादी तय हुई।

दुलहिन अरविंदा एक संपन्न किसान की इकलौती बेटी थी। चूँकि वह इकलौती बेटी थी, इसलिए माँ-बाप ने उसे

बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा। उससे कोई भी काम करवाता नहीं था।

शादी के दूसरे दिन किरिट ने पत्नी को पिता के कड़वे स्वभाव के बारे में सब कुछ बता दिया। उसे यह कहकर सावधान भी किया कि वह चुपचाप सब कुछ झेल ले। नयी बहू के आने पर दुर्वासा ने दो-तीन दिनों तक अपनी नाराजी को काबू में रखा।

एक दिन अरविंदा सास का दिया दूध से भरा कलसा पिछवाड़े से ला रही थी। यह देखते ही दुर्वासा चिल्लाने लगा। “तुम्हारी सास खुद कलसा ले आती तो क्या उसकी कमर टूट जाती?”

वह नहीं चाहता था कि नयी बहू कोई काम करे। पर उसके रूखे-सूखे स्वर और शैली ने अरविंदा को भयकंपित कर दिया। उसके हाथ से कलसा गिर गया। भय के मारे अरविंदा रोने लगी और भागती हुई घर के अंदर चली गयी। इस पर दुर्वासा क्षण-भर के लिए स्तंभित रह गया।

दूसरे दिन दुपहर को दुर्वासा बरामदे में बैठा था तब उसने देखा कि अरविंदा एक चीनी बरतन को कपड़े से साफ़ कर रही

है। यह देखते ही क्रोध-भरे स्वर में वह कहने लगा, “सबके सब नौकर कहाँ मर गये? पेट भर खाकर डकार लेते हैं, पर काम बिल्कुल नहीं करते। इनकी खाल उधेड़कर ही रहूँगा। सुनते हो, क्या कोई है वहाँ।”

ससुर की नाराजगी और चिल्लाहटों से अरविंदा भयभीत हो गयी। उसके हाथ का बरतन नीचे गिरा और टूट गया। यों, देश-विदेशों से मंगाये गये बरतन एक-एक करके टूटते गये। दुर्वासा को अपनी तुनकमिजाजी पर शर्म आयी।

एक और दिन जब अरविंदा अपनी सास और ससुर को खाना परोस रही थी तब दुर्वासा ने एक तरकारी का स्वाद चखा। बस, वह बौखला उठा, “क्या नमक का अकाल पड़ गया? मायके में रसोई बनाना जानती तो नहीं हो, पर परोसना भी नहीं आता?” ससुर की कड़ुवी बातें सुनकर वह डर गयी और उसके हाथों से बरतन नीचे गिर गया। वह अपने कमरे में आकर चादर ओढ़कर लेट गयी। दुर्वासा को अपने किये पर थोड़ा पछतावा हुआ।

उस क्षण से ससुर की कंठध्वनि सुनने मात्र से अरविंदा भय के मारे काँप उठती थी। हाथ में जो भी है, नीचे गिरा देती थी। बहू की इस आदत पर दुर्वासा को चिंता हुई और उसने वैद्य को बुलवाया।

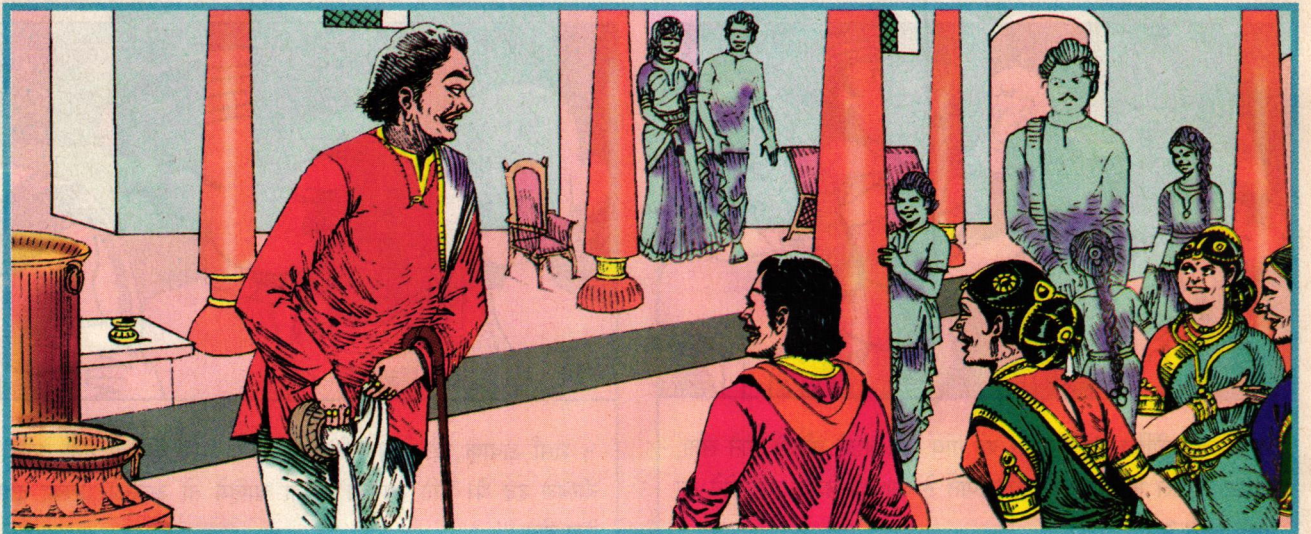
वैद्य ने अरविंदा से थोड़ी देर तक बातें कर चुकने के बाद

दुर्वासा से एकांत में बताया, “देखिये, आपकी बहू आपकी बात-बात पर डरती है। उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा है। आप थोड़ा धीरज से बोलेंगे तो अच्छा होगा। वह ठीक हो जायेगी।”

दुर्वासा को लगा कि वैद्य की बातों में सच्चाई है। जैसे-जैसे वह अपनी बहू के बारे में और अपने कड़ुवे स्वभाव के बारे में सोचने लगा, क्रमशः उसमें परिवर्तन होने लगा।

दीपावली त्यापहार के अवसर पर उसकी बेटियों के परिवारों से सब लोग आए हुए थे। वे सबके सब घर के बीचों-बीच बैठकर ठठाकर हँसते हुए बातें कर रहे थे। वहाँ बेटियाँ, उनके पति, पोते-पोतियाँ और दुर्वासा की पत्नी भी बैठे हुए थे। उसी समय दुर्वासा घर के अंदर आया। बस, एकदम चुप्पी छा गयी। लगता था, सबके मुँह सी दिये गए। वे सबके सब उठकर अंदर पाने ही वाले थे कि दुर्वास ने हँसते हुए कहा, “अब से मैं भी तुम लोगों के साथ-साथ हँसूँगा और धीमे स्वर में मीठी-मीठी बातें करूँगा। मैं नाराज हो भी जाऊँ तो तुम डरो मत। भाग मत जाना। आओ, सब लोग बैठ जाओ, आराम से बातें करेंगे।”

दुर्वासा की बातों से सब खुश हुए। सबके सब एकसाथ हँस पड़े। घर के वातावरण में कायापलट हो गयी।

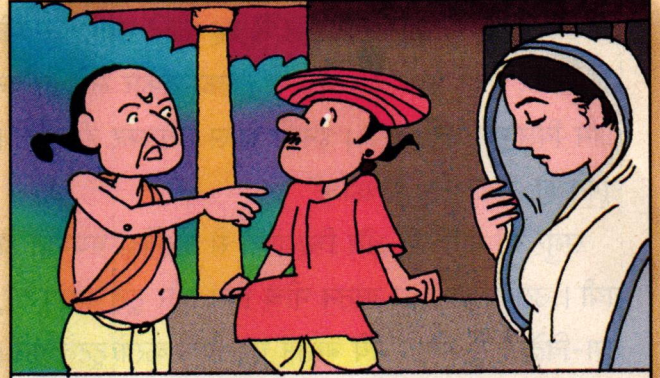


हाज़िरजवाब

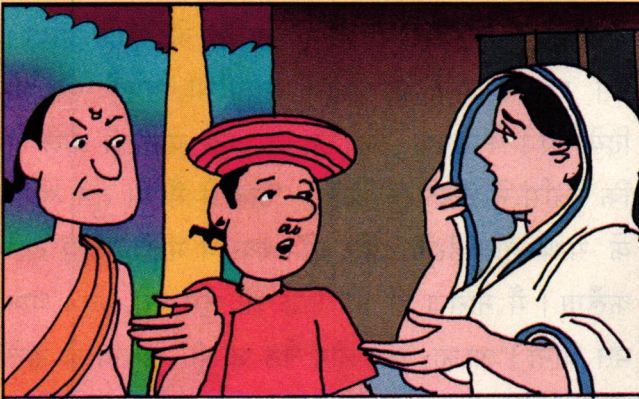
बीरबल



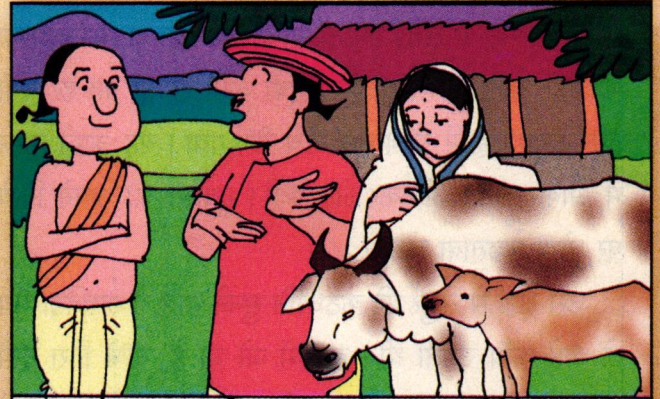
गैया और बछड़ा



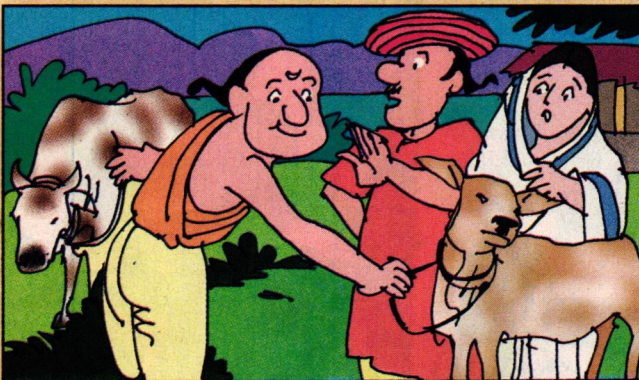
१. पुरोहित शर्मा और एक विधवा बीरबल के पास गए। शर्मा: “इसके पति ने मुझे अपनी गाय दान करने का वचन दिया था। अब यह इसे मुझे देने से इंकार करती है।”



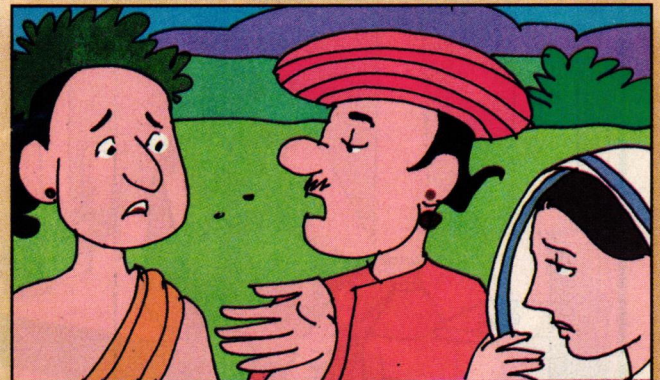
२. “मुझे ऐसे किसी वचन का ज्ञान नहीं। और पता भी होता तो मैं अपनी गाय नहीं दे पाती। यही मेरी आय का एकमात्र स्रोत है,” महिला ने कहा।



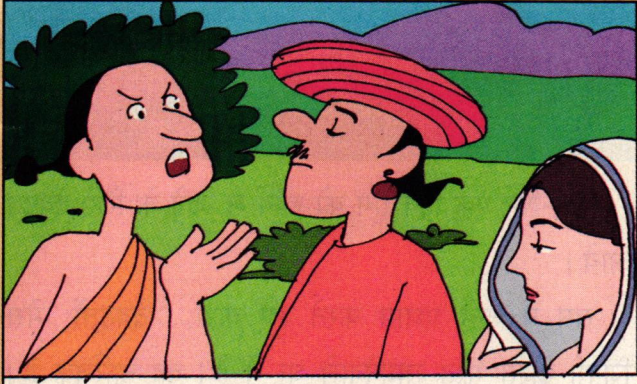
३ गाय और उसका बछड़ा लाए गए। बीरबल ने कहा, “कोई पुरोहित कभी झूठ नहीं बोलता; वचन पूरा करना होगा देवी। कृपया गाय उन्हें दे दें।”



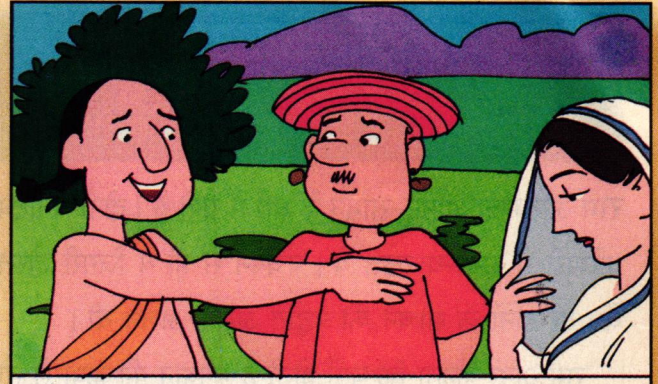
४ लालची पुरोहित प्रसन्न हुआ। वह गाय और बछड़े को ले जाने लगा, लेकिन बीरबल फिर बोले, “इसके पति ने आपको केवल गाय देने का वचन दिया था।”



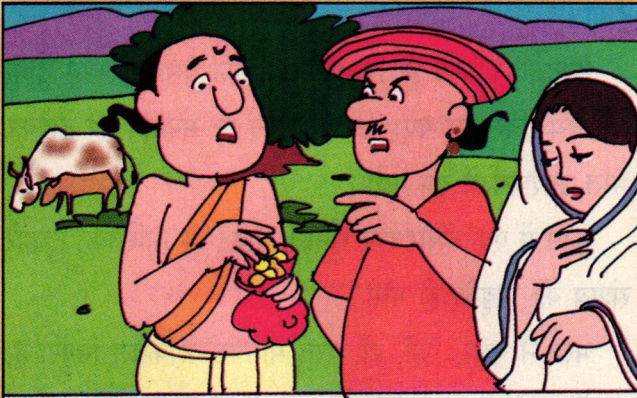
५ शर्मा अवाक् रह गया। “बिना बछड़े के गाय दूध ही नहीं देगी!” बीरबल हढ़ थे। यदि आपको बछड़ा चाहिये तो आपको उसका दाम देना होगा।”



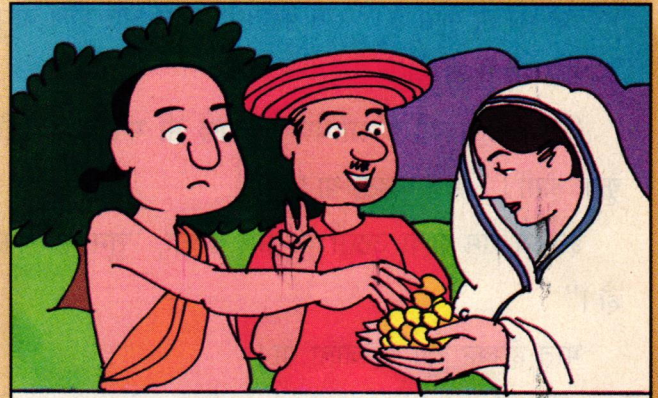
६ कितना?" शर्मा ने पूछा। "सौ स्वर्ण मुद्राएँ," बीरबल ने कहा। "यह तो बहुत है," पुरोहित ने प्रतिवाद किया।



७ "वचन तो वचन है," बीरबल ने कहा। पुरोहित ने अपना पैतरा बदला। "ठीक है हम इसके पति द्वारा दिया गया वचन भूल जाते हैं। मुझे गाय नहीं चाहिये।"



८ "श्रीमान्, अब आप इससे इन्कार नहीं कर सकते," बीरबल ने कहा। या तो आप एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ दें, या दण्ड के लिये तैयार रहें!"



९ पुरोहित ने धन दे दिया। बीरबल महिला की ओर मुड़े। "कृपया इसे स्वीकार करें। यह एक अच्छा सौदा है। आप इससे दो दुधारू गाएँ और बछड़े खरीद सकती हैं।"

मछलियाँ कैसे तैरती हैं?

मछलियाँ हवा की तुलना में लगभग ८०० गुना घनत्व वाले पानी में कैसे तैरती हैं? पानी, उसमें तेज़ गति से जाने वाली किसी भी वस्तु को रोकने की कोशिश करता है। लेकिन प्रकृति ने मछलियों को इस प्रकार बनाया है कि वे सागर के खिंचाव को झेल सकती हैं। मछली का शरीर चिकना, लम्बा और पतला होता है, जिससे वह पानी में से फिसल सकती है।

उसके शरीर में गैस भरा एक ब्लैडर होता है, जिससे वह न्यूनतम प्रयास से एक विशेष स्तर पर तैर सकती है। तैरने के लिये, मछली जिस दिशा में जाना चाहती है, उस ओर अपना सिर करके शरीर को हिलाती है। पंखों का उपयोग सन्तुलन बनाने, दिशा-निर्देशन और ब्रेक के लिये किया जाता है।

आस्तिक-नास्तिक

राम और भरत आमने-सामने के घरों में रहते थे। दोनों धनाढ्य परिवारों से सम्बन्ध रखते थे। बचपन से ही वे जिगरी दोस्त थे। पर दोनों के सोचने की पद्धति अलग-अलग थी।

राम अगर कहता कि वर्षा होती है भगवान की कृपा से तो भरत कहता कि इसका यह मतलब है कि भगवान की कृपा से ही अनावृष्टि होती है।

“प्रशांत प्रवाहित होनेवाली नदियों, प्रपातों सबके पीछे भगवान की ही कृपा है।” राम कहता। “धूप और प्राण वायु के पीछे भी वे ही हैं।”

“तो फिर भूकंपों व आँधियों के पीछे भी भगवान की ही कृपा होगी।” भरत कहता था।

इस पर राम झल्ला उठता था और कहता, “तुम नास्तिक हो।”

भरत हँसकर चुप रह जाता था।

इसी प्रकार मत-भिन्नता के साथ भी प्रेम से रहते हुए वे दोनों दोस्त बूढ़े हो गये। उनकी मृत्यु के क्षण भी निकट आ गये।

और फिर एक दिन राम को स्वर्ग ले जाने के लिए देवदूत आये।

राम ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, “देवदूतों, मेरा जिगरी दोस्त भरत सामनेवाले घर में है। वह नास्तिक है। वह भी आखिरी साँस ले रहा है। उसे भी मेरे साथ स्वर्ग ले चलिए।”

“भगवान को वहाँ प्रत्यक्ष देखने पर ही उसमें विश्वास होगा।”

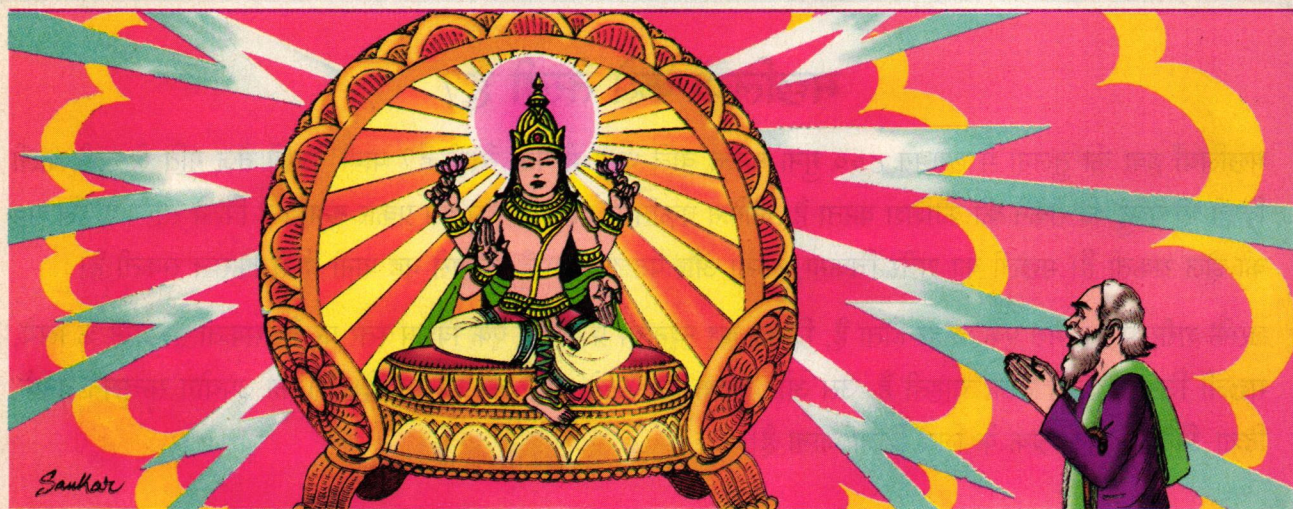
देवदूतों ने वैसा ही किया। स्वर्ग का वैभव देखकर दोनों आश्चर्यचकित रह गए। रत्न सिंहासन पर भगवान को देखकर भरत आश्चर्य में डूब गया।

इतने में एक गंभीर स्वर सुनायी पड़ा, “ऐ नास्तिक, तुम्हारे संशय की निवृत्ति हो गयी?”

भरत ने कहा, “हाँ, हाँ, परंतु मानवलोक केवल निर्गुण है, साक्षीभूत है।”

यों कहते हुए उसने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

- रमण शास्त्री



Log onto www.chandamama.com

YOUR CHANDAMAMA IS AVAILABLE IN MANY AVATARS!

Junior Chandamama (4+ age group):

A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination!



Regional Chandamama

Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!



Chandamama English (9+ age group)

A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 70 pages that value fun!

*** Vikram-Vetal * Panchatantra * Stories**

Revamped
Redesigned

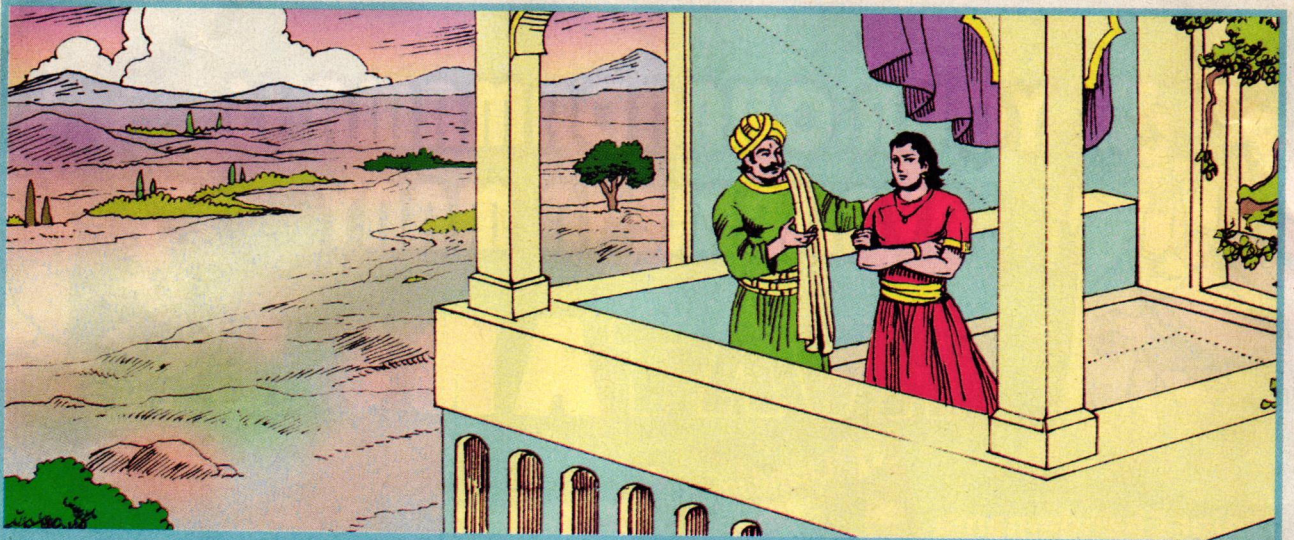
Relevant
Read it!



**YOUR LANGUAGE,
YOUR CHANDAMAMA.**

AVAILABLE IN 11 LANGUAGES:

Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil,
Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit.



भल्लूक मांत्रिक

प्राचीन काल में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर एक भयंकर जंगल था। उस जंगल में बसे एक गाँव में कालीवर्मा नामक एक क्षत्रिय युवक रहा करता था। उसका पिता महान योद्धा था जो चन्द्रशिला नगर के राजदरबार में एक सैनिक अधिकारी था। एक बार वह युद्ध में अपने अनुपम पराक्रम का परिचय देते हुए काम आया। उस वक्त कालीवर्मा केवल दस साल का बालक था। उसकी माँ अपने पति की मृत्यु की चिन्ता में घुल-घुल कर शीघ्र ही मर गई। ऐसी हालत में बलभद्र नामक एक विश्वासपात्र नौकर ने कालीवर्मा को पाल-पोसकर बड़ा किया और उसे क्षत्रियोचित सारी विद्याएँ सिखाईं।

कालीवर्मा जब बीस साल का युवक हुआ, तब बलभद्र ने एक दिन उसे समझाया—“कालीवर्मा, अब तुम इस छोटे से गाँव को छोड़ राजधानी नगर में जाओ। वहाँ पर राजदरबार में कोई नौकरी पाने की कोशिश करो।”

कालीवर्मा बोला, “चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु असमर्थ और कायर हैं। ऐसे राजा के दरबार में सैनिक बनकर पेट भरने से बढ़कर अपमान की बात मेरे लिये क्या हो सकती है? इसलिए मेरा अपना यही विचार है कि कहीं और जाकर आजीविका का कोई उपाय करूँ।”

वृद्ध बलभद्र ने थोड़ी देर सोचकर कहा, “राजाओं के शासन की दक्षता अधिकतर उनके दरबारी अधिकारियों पर निर्भर होती है। जितकेतु के पिता महान पराक्रमी थे। तुम्हारे पिता जैसे बुद्धिमान और पराक्रमी उनके दरबार में थे। उनकी मृत्यु के बाद जितकेतु गद्दी के वारिस बने। मेरा संदेह है कि राजा तो स्वार्थी और झूठी तारीफ़ करनेवाले लोगों से घिरे हुए हैं।”

“हो सकता है! मगर ऐसे राजा का क्या मैं अकेले ही उद्धार कर सकता हूँ? तब तो मैं इसी गाँव का खेत जोतकर अपना पेट पालना ज्यादा उचित समझता हूँ।” कालीवर्मा ने कहा।

“यह काम तुम जैसे क्षत्रिय युवक के करने लायक नहीं है। अलावा इसके जानते हो, तुम्हारे पिताने अपनी मृत्यु के समय मुझसे क्या कहा था?” इन शब्दों के साथ बलभद्र कालीवर्मा को एक कमरे के पास ले गया जिसे आज तक खोला नहीं गया था। उसे खोलकर कालीवर्मा को कमरे के भीतर ले गया।

उस कमरे में कालीवर्मा के पिता के द्वारा इस्तेमाल किये गये तरह-तरह के आयुध, कवच तथा उन अस्त्र-शस्त्रों के पास सोने की मूठवाली तलवार भी पड़ी थी। बलभद्र ने कालीवर्मा की कमर में तलवार बाँध दी, तब उसे कवच पहनाकर कहा, “ओह, ये सब हथियार ऐसे

प्रतीत हो रहे हैं मानो तुम्हारे लिए तैयार कराये गये हों! तुम्हारे पिता का आदेश था कि तुम एक क्षत्रिय योद्धा के रूप में अपने जन्म को सार्थक बनाओ। फिर तुम्हारी जैसी इच्छा।”

अपने पिता द्वारा छोड़े गये कवच व खड्ग के धारण करते ही कालीवर्मा का उत्साह उमड़ पड़ा। उसने तत्काल म्यान में से तलवार खींचकर उसकी धार की जांच की। उसकी चमक पर आश्चर्य करते हुए बोला, “बलभद्र! मैं निश्चय ही अपने पिता के आदेश का पालन करूँगा। मेरे भविष्य का निर्माण करने वाली चीज़ हल का फाल नहीं, तेज़ धारवाली यह तलवार है।”

ये बातें सुन बलभद्र बड़ा खुश हुआ और दूसरे दिन ही कालीवर्मा कवच धारण कर तलवार कमर में बाँध और मार्ग-व्यय के लिए एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ ले घोड़े पर सवार हो चल पड़ा।

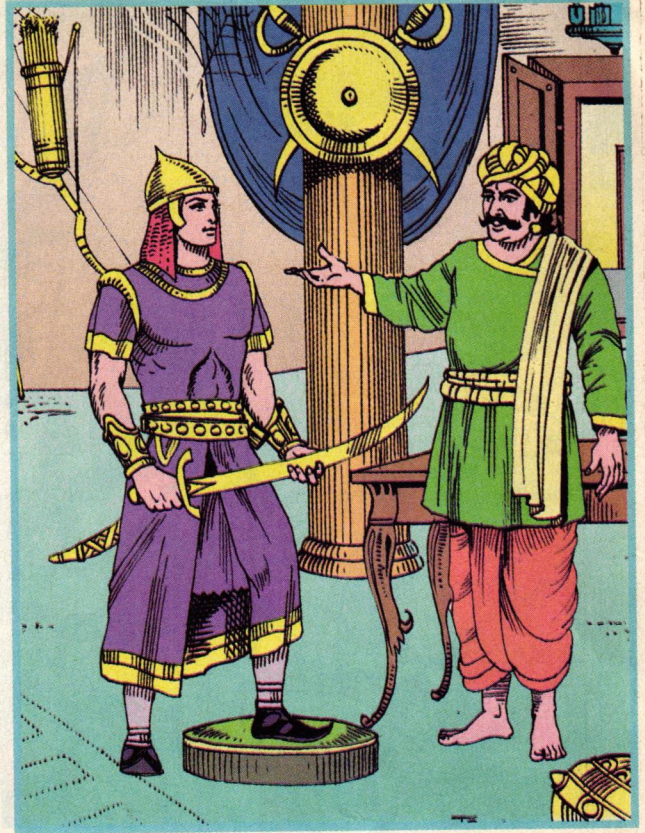
जंगल के रास्ते दुपहर तक कालीवर्मा की यात्रा बेरोकटोक चली। दुपहर के वक़्त उसने सोचा कि अपने साथ लाई गई रोटियाँ खाकर किसी पेड़ की छाया में विश्राम करे। तब पानी की खोज में वह किसी पहाड़ी नाले की ओर चल पड़ा। तभी उसे एक पेड़ पर से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी।

कालीवर्मा ने सर उठाकर पेड़ की शाखाओं में देखा। शाखाओं में से एक मानव आकृति चीखकर धम्म से ज़मीन पर गिर पड़ी। कालीवर्मा झट से घोड़े से उतर पड़ा और उस व्यक्ति के निकट पहुँचा। वह एक वृद्ध था।

कालीवर्मा उसके समीप जाकर बोला, “दादाजी, इस अवस्था में तुम पेड़ पर चढ़ गये?”

बूढ़े ने पलभर कालीवर्मा की ओर परखकर देखा, तब बोला, “बेटा, तुम कोई राजभट जैसे लगते हो। वैसे तुम लोग फ़सल की कटाई के समय कर वसूली को छोड़ फिर कभी इस प्रदेश में दिखाई नहीं देते।”

“मैं राजभट नहीं हूँ। यहीं नौकरी पाने के लिए राजधानी नगर में जा रहा हूँ। लेकिन तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। तुमने हाथ-पैर तो नहीं तुड़वाये? किस्मतवर लगते हो।” कालीवर्मा एक सांस में सारी बातें बोल गया।



बूढ़ा चुपचाप उठ खड़ा हुआ, चार-पाँच कदम चलकर सन्तुष्टि के साथ सर हिलाकर बोला, “तुम्हारे कहे अनुसार मैं किस्मतवर हूँ। ऐसा न होता तो इस बार लुटेरों ने जब गाँव पर हमला किया, तब घर पर ही रहकर उनके हाथों नाना प्रकार की यातनाएँ झेलता।”

बूढ़े की बातें सुनने पर कालीवर्मा को उसकी हालत थोड़ी बहुत समझ में आ गई। इसका मतलब था कि बूढ़ा लुटेरों से बचकर भाग आया, और पेड़ पर छिप गया, किन्तु पाँव फिसल जाने की वजह से नीचे गिर गया है।

“दादाजी! मैंने भी सुना है कि इस प्रदेश में लुटेरों का दबदबा कहीं ज़्यादा है। लेकिन मैंने यह बात नहीं सुनी थी कि दिन दहाड़े ही ये लोग हमला करके लूट लेते हैं। तुम्हारे गाँव के और लोग कहाँ गये हैं?” कालीवर्मा ने पूछा।

“बेटा, लुटेरोंको हमारे गाँव में प्रवेश करते देख सब लोग जहाँ-तहाँ भाग गये हैं। लुटेरों के गाँव छोड़कर जाने के बाद ही एक-एक करके सब लोग घर लौट आयेंगे।” बूढ़े ने कहा।



राजा के बारे में जानते हुए भी बूढ़े के मन की बात ताड़ने के ख्याल से कालीवर्मा ने पूछा, “दादा, तुम लोगों ने लुटेरों के बारे में राजा को क्यों सूचित नहीं किया?”

दादा उदास चेहरा बनाकर बोला, “हमारे द्वारा सूचना देने के पहले ही राजा के सिपाही हमारी आधी फ़सल उठाकर ले जाते हैं। बाकी आधी फ़सल इन चारों तरफ़ के पहाड़ों में बसनेवाले लुटेरे लूट ले जाते हैं।”

उसी वक़्त पेड़ों की ओट में से चार लुटेरे सामने आये और मजाक के स्वर में बोले, “वाह, बूढ़े ने ख़ूब कहा! आगे होने वाली फ़सल में से राजा का हिस्सा भी हम ही लोग लेनेवाले हैं।” इन शब्दों के साथ तलवार उठाकर कालीवर्मा से बोले, “तुम्हारे कवच, तलवार और घोड़े को देखने पर ऐसा लगता है कि तुम अपने साथ थोड़ा धन भी ले आये हो। धन की वह थैली ज़मीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट जाओ।”

कालीवर्मा ने चोरों की ओर एक बार तीव्र दृष्टि डाली, तब घोड़े

के पास जाकर वह ज़ीन से लटकनेवाली रोटियों की छोटी सी थैली ले आया और उसे ज़मीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट गया। चोरों में से एक बड़ी आतुरता के साथ झुककर थैली उठाने को हुआ, उसी वक़्त कालीवर्मा ने म्यान से तलवार खींचकर चोर की गर्दन उड़ा दी तथा दूसरे ही क्षण तेजी से आगे कूदकर दो और चोरों की छातियों में तलवार भौंक दी।

चौथा डर से ज़ोर से चिल्लाया और भागने को हुआ। पर कालीवर्मा ने तेज़ी के साथ दौड़कर उसके केश पकड़ लिए और उसकी कमर पर जोर से लात मारी। उसे बूढ़े के पास खींच लाया।

अचानक अपनी आँखों के सामने तीन चोरों का मर जाना तथा चौथे का हाथ-पैर मारते छटपटाना देख बूढ़ा काँप उठा और बोला, “बेटा, यह तुम्हारा कैसा साहस है? मेरे गाँव में तुमसे भी ज्यादा बलवान कितने ही नौजवान हैं! वे क्या कभी साहस करके इन चोरों का सामना करके वध कर पाये?”

“यह काम उन युवकों के द्वारा कराकर ही मैं राजधानी में जाऊंगा। भूख की बात फिर सोची जाएगी। तुम रोटियों की यह थैली लेकर अपने गाँव का रास्ता बतला दो। मैं अपने घोड़े के साथ इस लुटेरे को भी तुम्हारे पीछे ले आता हूँ।” कालीवर्मा ने कहा।

बूढ़ा और कालीवर्मा वहाँ से निकलने को ही थे तभी थोड़े से ग्रामवासी हाँफ़ते हुए वहाँ पहुँचे और पूछा, “दादाजी, क्या हुआ? चीखनेवाले वे लोग कौन थे?”

कालीवर्मा ने उनकी ओर घृणा भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा, ऐसा तो मुझे मालूम नहीं होता कि तुम में से कोई अंधा है। गाँवों पर हमला करके लूटनेवाले डाकुओं का सम्मिलित रूप से सामना करना छोड़ तुम लोग कायरों की भाँति जंगलों में भाग जाते हो?”

ये बातें सुन सबने लज्जा के मारे अपने सिर नीचे कर लिये। इस पर बूढ़े ने उन्हें सारा वृत्तान्त सुनाकर समझाया, “अबे, सुनो! आसपास के गाँवों के बूढ़ों को छोड़ बाक़ी लोग इस युवक को अपना नेता बनाकर पहाड़ों में छिपे लुटेरों का सामना करो। हम लोग दिन के वक़्त भी घर-द्वार छोड़कर आखिर कितने दिन इस प्रकार जंगलों में अपने सर छिपाते फिरेंगे?”

ये बातें सुन कालीवर्मा ने सन्तुष्टि के साथ सर हिलाकर कहा, “मैं तुम लोगों से जो कुछ कहना चाहता था, उसे इस वृद्ध ने बता दिया है। हमारे हाथ लगे इस चोर के द्वारा बाकी लुटेरों का निवास जानने में कोई कठिनाई नहीं होगी। तुम लोगों में जो भाले व लाठी चलाना जानते हैं, वे सब मेरे पीछे चलो। एक हफ्ते के अन्दर सभी लुटेरों का सर्वनाश करके मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।”

इसके बाद ग्रामवासी सादर कालीवर्मा को अपने गाँव ले गये और उसे बढ़िया दावत दी। उस दिन शाम को कुछ युवक दूर के गाँवों में जाकर कई युवकों को अपने साथ ले आये। कालीवर्मा ने उन्हें समझाया कि कैसे लुटेरों का हिंमत के साथ सामना करना है।

हाथ लगे लुटेरे ने जान के डर के मारे कालीवर्मा को अन्य लुटेरों के बारे में यह बता दिया कि उनमें से कितने लोग किस पहाड़ की गुफा या घाटी में छिपे हैं और वहाँ के गुप्त मार्ग क्या हैं।

कालीवर्मा ने गाँव के युवकों को साथ ले लुटेरों पर हठात् हमला कर दिया और अनेक लुटेरों को मार डाला। जो लुटेरे बच गये, वे राज्य की सीमा को पार कर जंगलों में भाग गये।

लुटेरों को भगाकर कालीवर्मा इतमीनान से राजधानी नगर की ओर चल पड़ा। पन्द्रह दिन की यात्रा के बाद वह जंगल को पार कर चन्द्रशिला नगर की सरहद पर पहुँचने ही जा रहा था कि एक दिन सूर्योदय के समय अचानक दस अश्वारोहियों ने आकर उसे घेर लिया। कालीवर्मा को म्यान से तलवार खींचने का मौका तक नहीं मिला।

अश्वदल के सरदार ने कालीवर्मा की ओर तीव्र दृष्टि से देखते हुए पूछा, “तुम्हीं कालीवर्मा हो न? लुटेरों को राज्य की सीमा से पड़ोसी राज्य में भगाने की धृष्टता करनेवाले भी तुम्हीं हो न?”

“हाँ, हाँ, मैंने ही यह काम किया है। ऐसे साहस का कार्य करनेवाले मुझे आदरपूर्वक राजधानी में न ले जाकर राजा के दर्शन कराने के बदले आप लोग इस तरह घेर रहे हैं,

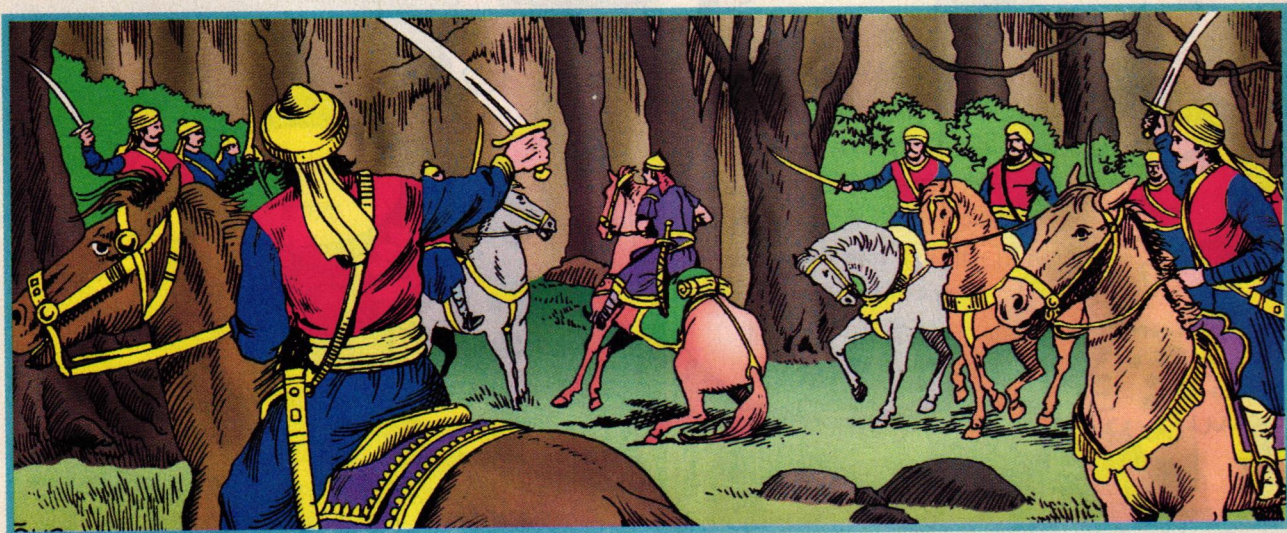
जैसे किसी लुटेरे को घेरा जाता है। यह कैसी बात है?” अचरज के साथ कालीवर्मा ने उनसे पूछा।

यह उत्तर सुनकर अश्वदल का नेता ठठाकर हँस पड़ा और बोला, “तुमने राजा जितकेतु के प्रति बड़ा ही अपराध किया है। यहाँ से भागनेवाले लुटेरों ने पड़ोसी राज्य में लूट-खसोट शुरू कर दी है। वहाँ के राजा यह सोचकर कि हमने ही उन लुटेरों को उनके राज्य में भगा दिया है, चन्द्रशिला नगर पर हमला करने जा रहे हैं।”

“इस गड़बड़ी का कारण तुम ही हो। इसलिए हम तुम्हें फांसी पर लटकाकर तुम्हारी लाश को उस राजा की सेवा में भेजने जा रहे हैं।”

“क्या तुम्हारे राजा जितकेतु के साथ तुम्हारे भी दिमाग खराब हो गये हैं?” ये शब्द कहते कालीवर्मा तलवार की मूठ पर हाथ डालने को हुआ कि अश्वारोही उसे बन्दी बनाकर घोड़े पर डाल राजधानी की ओर चल पड़े।

(क्रमशः)



बब्बू का मित्र - तोता



हेलो दोस्त,
तुम लोकप्रिय पालतू पक्षी हो और
बुद्धिमान पक्षियों में गिने जाते
हो, है ना?

हाँ बब्बू! तुम
सही हो।



हम तुम्हें कहाँ देख
सकते हैं?

हम लगभग
सारी दुनिया में गर्म मौसम
के स्थानों पर देखे जा
सकते हैं।



क्या तुम
हमें अपने बारे में
बताओगे?



हमारी चोंचें कठोर
और मुड़ी होती हैं। हमारे प्रत्येक
पैर पर चार उँगलियाँ होती हैं। हममें
से अधिकांश चटख रंगों वाले होते हैं,
जिनमें मुख्यतः हरा रंग होता है और अन्य
चमकीले रंगों का भी कुछ अंश देखा जाता
है। हमारे भाई, सुन्दर कॉकटू मुख्यतः सफेद
या काले होते हैं, और उनके सिर पर
पंखों की कलगी बनी
होती है।



तुम्हारी
विशेषता क्या
होती है?

बब्बू, हममें से
कुछ तुम्हारी नकल उतार सकते हैं।
विशेषकर हमारे भाई, अफ्रीकी धूसर
तोते शब्दों के अर्थ समझ कर सरल
वाक्य बना सकते हैं।



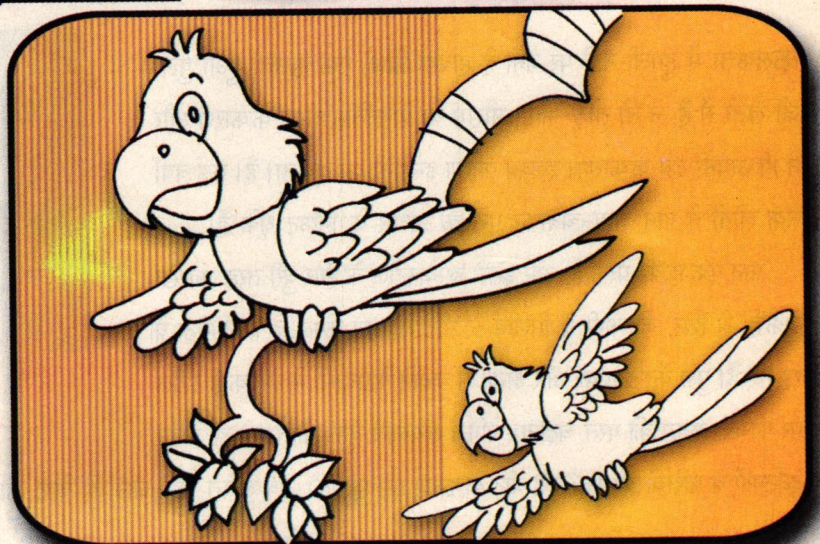
तुम्हारी उम्र कितनी
होती है?

हम पच्चीस-तीस
वर्ष जीते हैं।



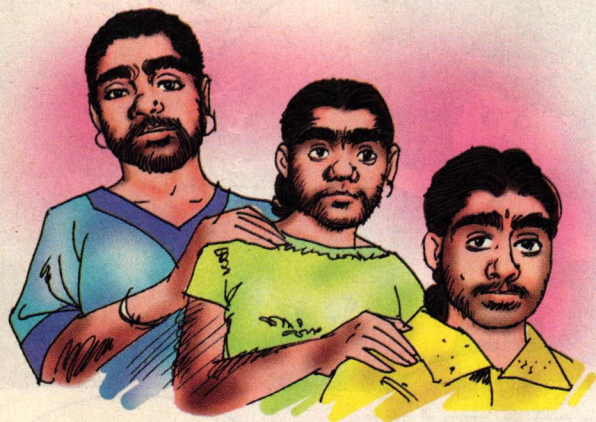
रंगों का जादू

तोते सुन्दर लगते हैं, है ना?
इनमें कुछ रंग भरकर इन्हें और सुन्दर बना दो।



भारतदर्शक

समानुभूति की दरकार



बेयरवूल्फ सिंड्रोम, या हायपरट्राइकोसिस, गुणसूत्रीय उत्परिवर्तन के कारण होने वाली एक अत्यन्त दुर्लभ चिकित्सकीय स्थिति है, जो एक अरब में से एक व्यक्ति को होती है, और जिसके पूरी दुनिया में लगभग १०० ही मामले पाए गए हैं। यह गड़बड़ी चेहरे और शरीर पर अनचाहे मोटे बालों में बेतहाशा वृद्धि कर देती है।

साँगली की बहनों २३ वर्षीय सविता, मोनिशा, १९ व १५ वर्षीय सावित्री को यह बीमारी अपने पिता से मिली। तीनों लड़कियाँ सिर से पैर तक काले घने बालों से ढँकी हैं। तीनों को बहुत कुछ सहना पड़ता है, क्योंकि उनके गाँव में उन्हें जाति बाहर माना जाता है, जिनपर बुरी आत्माओं का साया है।

यद्यपि चिकित्साशास्त्र में इस भयावह स्थिति के लिये कोई इलाज नहीं है, पर इन बहनों के लिये उम्मीद की एक किरण है। एक मेडिकल टीम ने न्यू लाइफ़ कर्नाटक नामक एक धर्मार्थ संस्था के माध्यम से एक अनोखी बाल निकालने वाली क्रीम बनाई है। उनके परिवार को उम्मीद है कि इससे उनके दुःख का निवारण होगा, या कम से कम उसमें कमी आएगी। लेकिन वे गरीब हैं, और केवल गैर-सरकारी संस्थाओं की आर्थिक मदद पर आश्रित हैं।

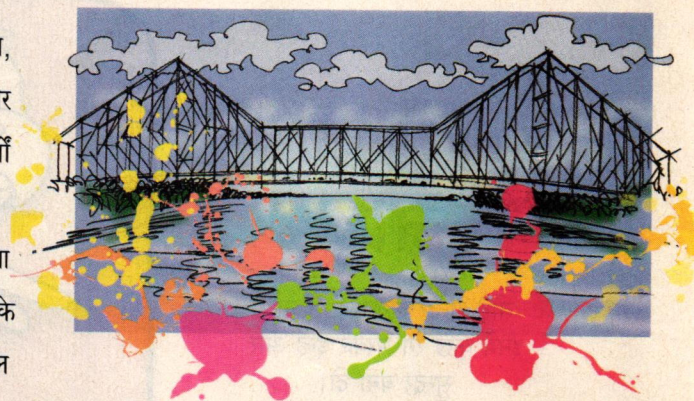
ये लड़कियाँ अपने घर से निकलने में झिझकती और घबराती हैं, क्योंकि सार्वजनिक रूप से दिखाई देने पर इनपर कटाक्ष और हमला किया जाता है। कई लोगों द्वारा बुरी आत्माओं के श्राप के रूप में मानी जाने वाली ये बहनें समानुभूति के लिये बहुत व्याकुल हैं। लोगों को शिक्षित किया जाना आवश्यक है कि ये लड़कियाँ और इनके जैसे कई लोग रोगग्रस्त हैं न कि किसी बुरी आत्मा का श्राप।

थूकने से गिर सकता है हावड़ा ब्रिज

कलकत्ता में हुगली नदी पर बना है हावड़ा ब्रिज, एक झूलता हुआ पुल, जो खतरे में है, न तो तोड़-फोड़, मौसम या प्राकृतिक क्षरण के कारण और न ही अपनी उम्र के कारण। इसका कारण इन्सानों का थूकना है। कई वर्षों तक लोगों ने पान चबा-चबाकर पुल के आधार के निकट थूके हैं।

पान एक हल्का प्रेरक है, और इससे इसके स्टील के हैंगर बुरी तरह जंग खा चुके हैं। ये हैंगर, जो कभी ६ मिलीमीटर मोटे थे, अब केवल ३ मिलीमीटर के रह गए हैं। पुल के स्टील को और क्षरण से बचाने के प्रयासों में से एक है स्टील पर फायबर ग्लास की परत चढ़ाना। लेकिन क्षयकारी थूक और पहले हुई बाहन

दुर्घटनाएँ व पक्षियों की क्षयकारी बीट के कारण इस पुल को अब दुरुस्त किये जाने की बेहद आवश्यकता है, ताकि कोई दुर्घटना न हो।





चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।

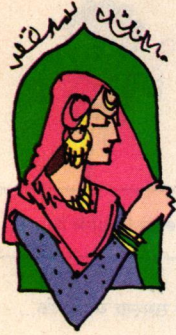


English	Give me the details.	I refuse to do it.	I need pointers.	The only trouble is...
Hindi	मुझे विवरण दीजिये।	मैं यह करने से इन्कार करता हूँ।	मुझे संकेतक चाहिये।	अकेली समस्या यह है कि...
Assamese	ঢাক কবিতাৰ টকাৰা। মুক কোবিশোক কুবা।	মই এইটো কবিতাৰ অস্বীকাৰ কৰিছো। মোই এতু কোৱিবলোই অস্বীকাৰ কোৱিসু।	ঢাক গইনটোৰ নাট্য। মুক পোইন্টৰ লাগে।	একমাত্ৰ সমস্যাটো হ'ল ... একমাত্ৰ সমস্যাতু হোই...
Bengali	আমাকে বিবরণ তথ্য দাও। আমাকে বিশদ তথ্য দাও।	আমি এটা কবিতা অস্বীকার করছি। আমি এটা কোরে অস্বীকার কোরছি।	আমার গাইনটো লাগবে। আমার পোইন্ট লাগবে।	একমাত্র সমস্যা হল... একমাত্র অসুবিধা হলো...
Kannada	ನನ್ನ ವಿವರ ಕೊಡು. ನಾನು ವಿವರ ಕೊಡು.	ನಾನು ಅದನ್ನು ಮಾಡಲು ನಿರಾಕರಿಸಿದೆ. ನಾನು ಅದನ್ನು ಮಾಡಲು ನಿರಾಕರಿಸಿದೆ.	ನನಗೆ ಸೂಚನೆಗಳು ಬೇಕು. ನನಗೆ ಸೂಚನೆಗಳು ಬೇಕು.	ಇರುವ ಒಂದೇ ಒಂದು ಸಮಸ್ಯೆಯೆಂದರೆ... ಇರುವ ಒಂದೇ ಒಂದು ಸಮಸ್ಯೆಯೆಂದರೆ...
Gujarati	મને વિગતો આપો. મને વિગતો આપો.	મેં તે કરવાનું નકાર્યું. મેં તે કરવાનું નકાર્યું.	મને પોઇન્ટ્સની જરૂર છે. મને પોઇન્ટ્સની જરૂર છે.	મુશ્કેલી ફક્ત એ છે... મુશ્કેલી ફક્ત એ છે...
Malayalam	വിശദവിവരങ്ങൾ എനിക്കു നൽകൂ. വിശദ വിവരങ്ങൾ എനിക്കു നൽകൂ.	ഞാനതു ചെയ്യാൻ വിസമ്മതിച്ചു. ഞാനതു ചെയ്യാൻ വിസമ്മതിച്ചു.	എനിക്ക് സൂചകങ്ങൾ വേണം. എനിക്ക് സൂചകങ്ങൾ വേണം.	ഒരേയൊരു ബുദ്ധിമുട്ട്... ഒരേയൊരു ബുദ്ധിമുട്ട്...
Marathi	मला सविस्तर तपशील दे. मला सविस्तर तपशील दे.	मी ते करायला नकार देतो/देते. मी ते करायला नकार देतो/देते.	मला मुझे देणाऱ्यांची आवश्यकता आहे. मला मुझे देणाऱ्यांची आवश्यकता आहे.	फक्त अडचण ही आहे की फक्त अडचण ही आहे कि...
Oriya	ମୋତେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିବରଣୀ ଦିଅ। ମୋତେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିବରଣୀ ଦିଅ।	ମୁଁ ଏହା ପାଇଁ ମନା କଲି। ମୁଁ ଏହା ପାଇଁ ମନା କଲି।	ମୋତେ ପଏଣ୍ଟର ଦରକାର। ମୋତେ ପଏଣ୍ଟର ଦରକାର।	ଗୋଟିଏ ସମସ୍ୟା ହେଉଛି... ଗୋଟିଏ ସମସ୍ୟା ହେଉଛି...
Sanskrit	मां सविस्तरं वद। माम् सविस्तरम् वद।	अहं न अङ्गीकरोमि। अहम् न अङ्गीकरोमि।	अहं दर्शकम् इच्छामि। अहम् दर्शकम् इच्छामि।	इयम् एका समस्या। इयम् एका समस्याः...
Tamil	எனக்கு விவரங்கள் தா. எனக்கு விவரங்கள் தா.	நான் அதை செய்ய மறுக்கிறேன். நான் அதைச் செய்ய மறுக்கிறேன்.	எனக்கு உதவி தேவை. எனக்கு உதவி தேவை.	ஒரேயொரு பிரச்சினை... ஒரேயொரு பிரச்சினை...
Telugu	నాకు వివరాలు ఇవ్వండి. నాకు వివరాలు ఇవ్వండి.	దానిని చెప్పడానికి మేము ఒప్పుకోము. దానిని చెప్పడానికి మేము ఒప్పుకోము.	నాకు సూచనలు అవసరం. నాకు సూచనలు అవసరం.	ఒకే ఒక సమస్య ఏమిటంటే... ఒకే ఒక సమస్య ఏమిటంటే...

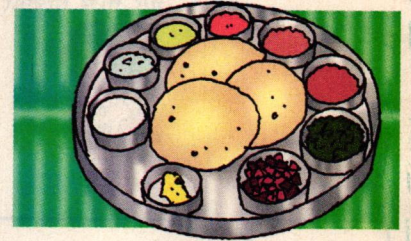


भोजन राजा

दिल्ली का भोजन



दिल्ली में एक कहावत मशहूर है - इन्सान दो तरह के होते हैं, एक जो जीने के लिये खाते हैं, और दूसरे, जो खाने के लिये जीते हैं। खुशकिस्मती से दिल्ली वालों को अच्छे भोजन का जानकार माना जाता है, जो पिछली कई



शताब्दियों में कई संस्कृतियों से आदान-प्रदान के प्रभाव से हुआ है। दिल्ली के खाने की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति है और कुछ शानदार व्यंजन और प्रादेशिक भोजन बहुत जाने जाते हैं। चीनी से लेकर कॉन्टिनेन्टल तक, स्वादिष्ट कबाबों की खुशबुएँ और पीढ़ियों से चली आ रही पाक विधियाँ, दिल्ली का भोजन कई विविधताएँ लिये है और यह प्रत्येक व्यक्ति को मनचाहा स्वाद देता है।

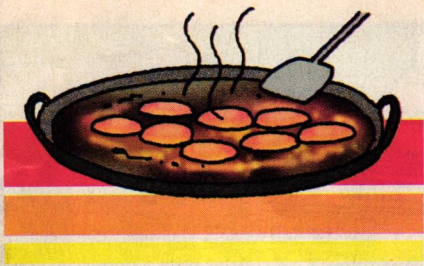


दिल्ली के स्वाद

अच्छा भोजन दिल्ली की विशेषता है और यह केवल बड़ी और शानदार जगहों पर ही मिलता हो, ऐसा नहीं है। लोगों का स्वाद शानदार जगहों से हटकर पुरानी दिल्ली के कुछ अनजान से स्थानों के कम शान-शौकत वाले लेकिन अधिक लोगप्रिय खाने के स्थानों पर सिमट आया है। जब आप लाल किले पर जाएँ, तो वहाँ की हवा में अब तक फैलती शाही



खाने की खुशबू लेना न भूलें। यहाँ से किसी भी मोड़ पर मुड़ जाएँ, और आप गली पराँठेवाली में पहुँच जाएँगे। अपने कई परतों वाले पराँठों - यानि तवे पर तली गई बिना खमीर वाली रोटियों के लिये प्रसिद्ध, इस गली में कई पीढ़ियों को अपने पराठों से दीवाना बनाने वाले तीन परिवार हैं। दाएँ मुड़ें, और ५० मीटर आगे आप घंटेवाली मिठाई की दुकान पर पहुँच



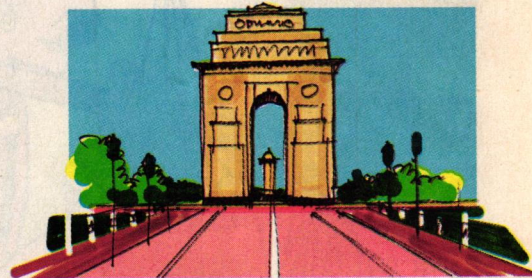
जाएँगे, जो इस पूरे स्थान पर छाई हुई १८वीं शताब्दी की दुकान है। कहा जाता है कि यहाँ की पाकविधियाँ अब भी वही हैं, और स्वाद भी वही जिसकी खुशबू ने एक बार सम्राट के हाथी को यहाँ रोक दिया था और उसने वहाँ का घंटा बजाया था। इस पुरानी दुकान में बनने वाली

प्रसिद्ध मिठाइयों का स्वाद लेना न भूलें। इसके अलावा, पूरी दिल्ली में 'चाट' से लेकर 'रामलड्डू' और 'दही भल्ले' से लेकर स्वादिष्ट 'कुल्फी' तक बेचने वाले रेहड़ीवाले फैले हैं।

दिल्ली की गलियों से

दिल्ली में, हर गली के नुक्कड़ पर पाई जा सकने वाली लज़ीज़ खाने की एक किस्म की परम्परा है। यद्यपि कुछ लोग उसे 'जंक' में शुमार करते हैं, पर केवल एक सच्चा दिल्लीवासी ही इन भरवाँ और चटनीयुक्त व्यंजनों के आनन्द को जानता है। दिल्ली की सड़कों पर इनका लुटफ़ लेना ही चाहिये।

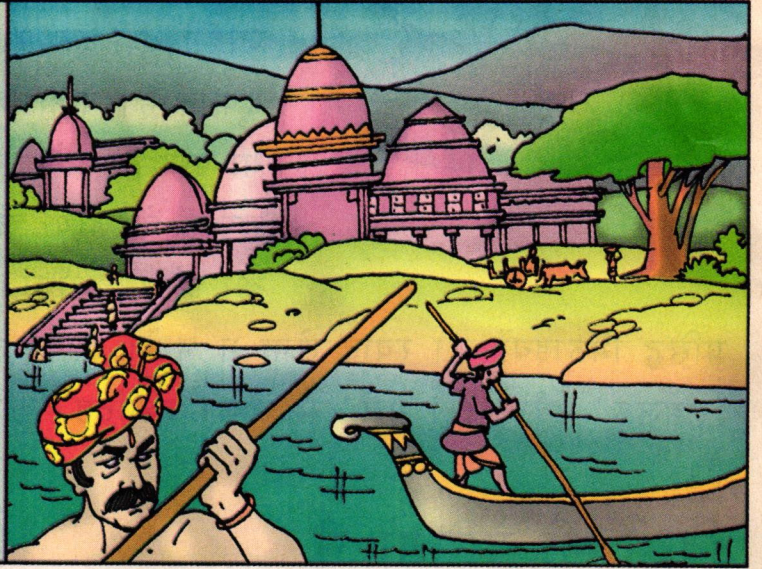
दिल्ली का प्रतीकात्मक निरूपण है चाट, जो आपकी स्वाद ग्रंथियों के लिये कई प्रकार के स्वाद और लुटफ़ देती है। तंगी पानी पुरी, भल्ला पपड़ी, टिक्की और सबसे बेहतरीन राज कचौरी व लच्छा कचौरी खाकर देखिये, नर्म से लेकर कड़क, ठंडी से गर्म और मीठे से खट्टे तक, स्वाद का यह सिलसिला आप छोड़ नहीं सकते। और यह सूची केवल इतनी नहीं है। सबसे तीखे आलू के समोसे, कचौरियाँ, ब्रेड पकौड़े, छोले-भटूरे, चीले और भी बहुत सी चीज़ें सामने आएँगी। मिठाई प्रेमियों के लिये भी इतनी ही तरह की मिठाइयाँ उपलब्ध हैं - मलाई की कुल्फी, गुलाब जामुन और जलेबियाँ आदि।



इस मेनू को पूरा करते हैं कुछ विदेशी व्यंजन, भारतीय शैली की चीनी चाट, तिब्बती मोमो और चाओमिन की पूछ सड़क की रेहड़ियों पर बढ़ रही है। मांसाहारी व्यंजनों में लज्जतदार सीख कबाब, तंदूरी चिकन, चिकन टिक्का, गुलाटी कबाब, फ़िश फ्राय और सीख वाला सबकुछ। और तीखी हरी और लाल चटनी को तो बिल्कुल न भूलें जो आपके मुँह के जायके को कई गुणा बढ़ाती है।

कृष्ण की कहानी - १

सहस्रों वर्ष पहले, मथुरा उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध नगर था। इसे मधु ने बनाया था, जो एक असुर था। असुर दिखने और शक्ति में महाकाय थे, लेकिन उनमें से कई सौन्दर्य प्रेमी थे।



यमुना के तट पर
बसा वह नगर
बगीचों, मन्दिरों
और यात्रियों के
लिये सरायों से
सुसज्जित था। लोग
शान्तिपूर्वक अपना
जीवन-यापन कर
रहे थे।



मधु का वंशज
उग्रसेन एक उदार-
हृदय राजा था;
वह हमेशा अपनी
प्रजा की भलाई के
बारे में सोचता था।



महाराज,
लोग प्रसन्न हैं और
आपकी केवल प्रशंसा
ही करते हैं।

यह जानकर हम
प्रसन्न हैं, मंत्रीजी।

उग्रसेन भगवान शिव का भक्त था। उसने एक समय में उस स्थान के राजा, अपने पूर्वज मधु के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। यह त्रेता युग था।

ओम् नमः
शिवाय! ओम् नमः
शिवाय!



एक बार मधु ने जंगल में जाकर शिव की भक्ति की, जो प्रसन्न होकर उसके सामने उपस्थित हुए।

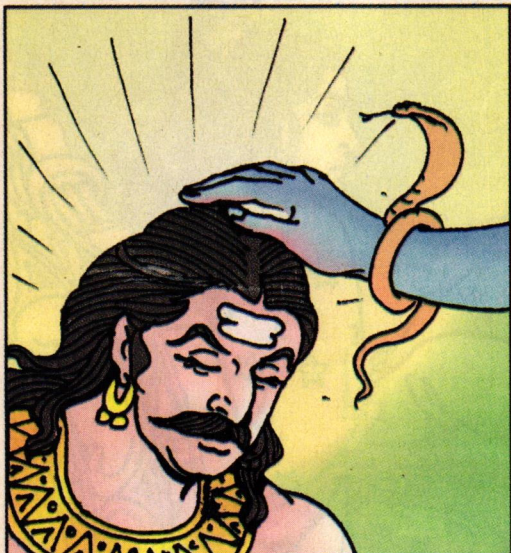
यह तुच्छ भक्त
आपकी कृपा चाहता है, हे
भगवन्।



मैं तुमसे
प्रसन्न हूँ पुत्र। माँगो
क्या माँगते हो।



महादेव ने मधु को एक त्रिशूल दिया। उसे वह शिवशक्ति कहता था। वह त्रिशूल शत्रु को भस्म करके वापस उसके पास लौट आता था। एक बार मधु त्रिकूट पहुँचा।



अति सुन्दर!
यह कौन सा नगर
है?



यह लंका के राजा रावण का किला था।

मैं भी ऐसा ही एक
नगर बसाऊँगा!

मधुपुरी, या मथुरा,
जो मधु द्वारा बसाया
गया नगर था, लगभग
त्रिकूट पर्वत पर बसे
नगर के समान ही
था। एक दिन मधु
ने विश्ववसु की पुत्री
कुम्भिनाशी को देखा।

उसने उसका हरण करके उसे अपनी पत्नी
बनाया।

रावण मेरा
सम्बन्धी है। वह इस विवाह से
अप्रसन्न होगा।

तो मैं
उससे युद्ध करूँगा!

युद्ध हुआ और रावण ने मधु को
हरा दिया।

उग्रसेन ने मधु की
कथा अपनी रानी
को सुनाई।

मधु का
कुम्भिनाशी से एक पुत्र था,
जिसका नाम लवणासुर
था।

एक दिन, उग्रसेन की रानी अपनी दासियों सहित बाग में थी।

कालिन्दी
की वायु कितनी
ठंडी है!

आइये
महारानी, हम बाग में
ही कुछ समय व्यतीत
करते हैं।

अचानक उन्होंने
राजा उग्रसेन को
बाग में आते देखा।
दासियाँ राजा और
रानी को अकेला
छोड़कर वहाँ से
चली गईं।

स्वामी!
आप इस समय यहाँ
कैसे?

दरबार समाप्त होने के बाद मुझे थकान
महसूस हो रही थी। मेरा तुम्हारे साथ
थोड़ा समय व्यतीत करने का
मन था।

जारी...



युवा योगी!

सरल योगमाला

संस्कृत के शब्द परिवृत्त का अर्थ होता है सुलझा हुआ, गोल या पीछे की ओर मुड़ा हुआ, पार्श्व का अर्थ है बगल और कोण का अर्थ है मोड़। युवा योगी आपको प्रत्येक चरण आसन तरीके से सिखाएँगे। सावधानीपूर्वक उनका अनुसरण करें और योग के महान लाभ उठाएँ।

परिवृत्त पार्श्व कोण आसन - मुड़कर बगल में झुकने का तरीका

१



गहरी साँस लेकर अपने पैर कंधों की चौड़ाई से कुछ अधिक फैलाएँ (लगभग ३-४ फीट)।

८



अपनी बाईं हथेली को दाएँ पैर के बाहर की ओर फर्श पर पूरा टिकाएँ। बाईं कोहनी को दाएँ घुटने की बाहरी ओर टिकाएँ।

२



अपने हाथों को कंधों से सीधे, फर्श के समानांतर इस प्रकार फैलाएँ कि आपकी हथेलियाँ नीचे की ओर रहें।

९



दाएँ हाथ को अपने सिर के ऊपर दूसरी ओर ले जाकर फर्श के समानांतर तक इस प्रकार तानें कि कोहनी का अन्दरूनी भाग आपके दाएँ कान पर टिका हो।

३



धीरे से साँस छोड़ते हुए अपने दाएँ पैर को दाईं ओर ९० डिग्री तक मोड़ें और घुटने को भी ९० डिग्री तक मोड़ें।

६



धीरे-धीरे खड़े होने की स्थिति में आ जाएँ। २ से ६ तक के निर्देशों का पालन करते हुए दूसरी ओर दुहराएँ।

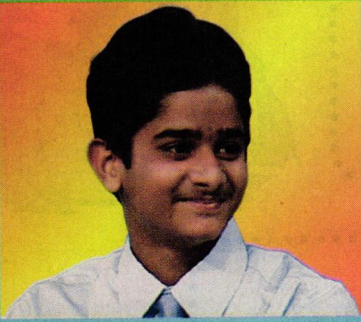
लाभ

परिवृत्त पार्श्व कोण आसन शरीर के दोनों बगलों की मांसपेशियों को तानता है। इससे पिंडली, टखने और जाँघों के साथ ही बाँहें भी मजबूत होती हैं। यह कमर और कूल्हे की मांसपेशियों को आकार देने के लिये भी बहुत अच्छा आसन है। इससे पाचन प्रणाली भी मजबूत होती है और पाचन शक्ति बढ़ती है, रक्त संचार ठीक होता है और रीढ़ की हड्डी को शक्ति और लचीलापन मिलता है।

- पेट्रिशिया पांडियन

युवा सितारे

विलक्षण बालक



यदि आप अपने परिवार या आस-पास के किसी बच्चे का नाम युवा सितारे के रूप में सुझाना चाहें, तो कृपया हमें बच्चे का विवरण और अपना संपर्क विवरण इस पते पर भेजें:

Young Achievers-RCM,
Chandamama India Ltd.,
No.2, Ground Floor,
Swathi Enclave,
Amman Koil Street,
Vadapalani, Chennai-26.
(या)
online@chandamama.com

वर्षों पूर्व, भारत के दूर-दराज के एक गाँव से कुछ दृश्य आए। इस वीडियो में एक लड़की के हाथों की बुरी तरह जलकर चिपक गई अँगुलियों को अलग करने के लिये सर्जरी दिखाई गई थी।

इस ऑपरेशन को दुनिया भर में ख्याति क्यों मिली? क्योंकि यह सर्जरी हिमाचल प्रदेश के एक सात वर्षीय बालक, अकृत जसवाल ने की थी।

अब १३ साल के अकृत का आईक्यू १४६ है और वे भारत में अपनी उम्र के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माने जाते हैं।

“वह बहुत जल्दी सीखता है,” अकृत की माँ, रक्षा बताती हैं।

अकृत कहते हैं कि वे कैंसर के रोगियों को सड़क के किनारे

पड़े देखते थे क्योंकि या तो वे इलाज का खर्च वहन नहीं कर पाते थे या फिर अस्पतालों में उनके लिये जगह नहीं थी।

अब वे अपने हुनर का उपयोग उनकी तकलीफ़ को जितना हो सके कम करने के लिये करना चाहते हैं।

“मैं छः साल की उम्र से अस्पतालों में जा रहा हूँ, अतः मैंने लोगों की तकलीफ़ें खुद देखी हैं,” वे कहते हैं।

“मैं बहुत दुःखी हो जाता हूँ और यही मेरी चिकित्सा में रुचि का कारण है, कैंसर के बारे में मेरा जुनून।”

फिलहाल, अकृत प्राणी शास्त्र और वनस्पति शास्त्र में स्नातक डिग्री पाने के लिये पढ़ाई कर रहे हैं।



Shop



Archives
from 1947



Jokes

Visit the new

chandamama.com

चुटकुले

दर्जी: आपका सूट दो महीने में तैयार हो जाएगा।

ग्राहक: दो महीने! लेकिन भगवान ने तो छः दिनों में पूरी दुनिया बना डाली थी!

दर्जी: हाँ, लेकिन देखिये दुनिया किस हाल में है।



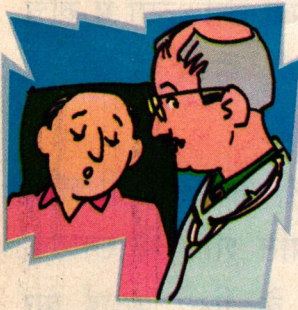
टीचर: क्या सच में इस नोट पर तुम्हारी माँ के ही हस्ताक्षर हैं?

टिंकू: हाँ मिस, देखिये सिद्ध करने के लिये यह रही ट्रेसिंग।

मैनेजर: मुझे खेद है कि मैंने जिस नवयुवक को काम पर रखा था वह काम का नहीं है।

अकाउंटेंट्स क्लर्क: अरे उसके दिखने पर मत जाइये।

मैनेजर: नहीं, मैं उसने न दिखने से बता रहा हूँ।



डॉक्टर: पन्नालालजी, आप दिल के ऑपरेशन के बाद कैसा महसूस कर रहे हैं?

पन्नालाल: डॉक्टर साहब, मुझे दो-दो धड़कने सुनाई देती हैं।

डॉक्टर: हे भगवान! मैं भी सोच रहा था कि मेरी घड़ी कहाँ गई।

पति (दफ़्तर से पत्नी को फ़ोन करके): मुझे संगीत निशा के दो टिकट मिले हैं।

पत्नी: अरे वाह! मैं जल्दी तैयार होना शुरू कर दूँगी।

पति: हाँ, जल्दी करना। टिकट कल रात के हैं।



किचन का पन्ना

फलों पर नक्काशी: केले की डॉल्फिन

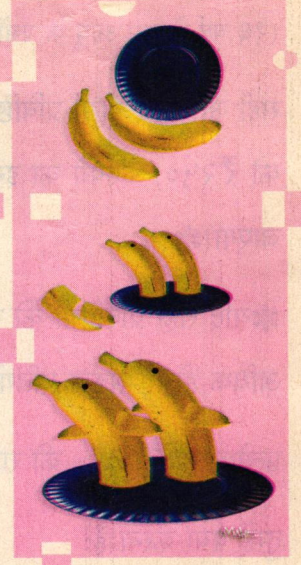
क्या तुम केले की डॉल्फिन बनाकर अपने शोकेस में नहीं सजाना चाहोगे? तो बस इन चरणों का पालन करो!

आवश्यक वस्तुएँ:

- केले - २
- नीली प्लेट - १
- ट्रूपिक - ४
- पेपरकॉर्न - २

विधि:

१. केलों को चित्र में दिखाए अनुसार दो भागों में काट लो।
२. केलों को चित्र में दिखाए अनुसार प्लेट पर रख दो।
३. बचे हुए केले के छिलके में से चार टुकड़े काटो।
४. ट्रूपिक का उपयोग करके केले के छिलके के टुकड़ों को मछली के पंखों की तरह लगा दो।
५. आँखों की जगह पेपरकॉर्न का उपयोग करो।



१. केले की डॉल्फिन तुम्हारे शोकेस को सजाने के लिये तैयार हैं!

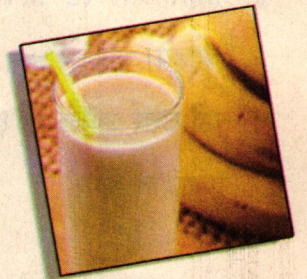
केले का मिल्कशेक

सामग्री:

- पका केला - १
- ठंडा दूध - ४०० मिली
- शकर - २ चम्मच
- पीला रंग - १ बूँद (वैकल्पिक)

तैयारी:

१. एक केला काटो, १/२ कप दूध मिलाओ और उसे एकरस होने तक मिक्सी में मिलाओ
२. शकर मिलाओ और फिर से मिक्सी में मिलाओ
३. एक चम्मच बारीक पिसे हुए केले के टुकड़ों को ग्लास में डालो और उसपर मिल्कशेक डाल दें।
४. अब इसे ठंडा-ठंडा परोसो



चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४८

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को ₹२५०/- रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

*यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को ₹५०/- की राशि मिलेगी।

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।
२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।
३. लिफाफे पर चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी - ४८ लिखो।
४. तुम्हारे उत्तर २८ फरवरी तक मिल जाने चाहिये।
५. सही उत्तर अप्रैल २०१३ के अंक में प्रकाशित होंगे।

मिला-जुला



१. 'एक टुकड़ा धरती, एक टुकड़ा आकाश', नामक काव्य संग्रह में भारत के किस पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा लिखी गई कविताएँ हैं?
२. बहुजन समाज पार्टी का चुनाव चिह्न क्या है?
३. कीमती धातु स्वर्ण की शुद्धता कैरेट में आँकी जाती है। ७५ प्रतिशत सोने और २५ प्रतिशत अन्य धातुओं के मिश्रण को क्या कहेंगे?
४. किस खेल में भारत ने कभी विश्व चैम्पियनशिप नहीं जीती है?
५. विश्व की सबसे बड़ी झील कौन सी है?
६. कपड़े धोने के सोड़े का रासायनिक नाम क्या है?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४५, अक्टूबर २०१२ के उत्तर:

१. पोरबन्दर, २. पुतली बाई, ३. मोरिस्पक, ४. बेलगाम, ५. हरिजन,
६. साबरमती, ७. सम्बरन.

October'12 Winners: Abhilash B.K. Kuzhthurai, S.N. Venkatesh, Challakere.

त्वरित फॉर्मूला

जनवरी, २०१३ का सवाल:

मोना की बचत

मोना के पिता उसे उसकी गुलुक में डालने के लिये रोज़ पैसे देते हैं। दिया गया धन हर दिन मोना की गुलुक के धन को दुगना कर देता है।

मोना की गुलुक में १०० हैं और उसके पिता भी पहले दिन उसे १०० देते हैं। मोना की गुलुक में कुल धन २०० हो गया। दूसरे दिन उसके पिता उसे २०० देते हैं, तीसरे दिन ४०० और इसी प्रकार वे प्रत्येक दिन देते हैं। १५वें दिन मोना की गुलुक पूरी भर जाती है।



निम्न प्रश्नों के उत्तर दो:

(अ) मोना की गुलुक आधी किस दिन भरेगी?

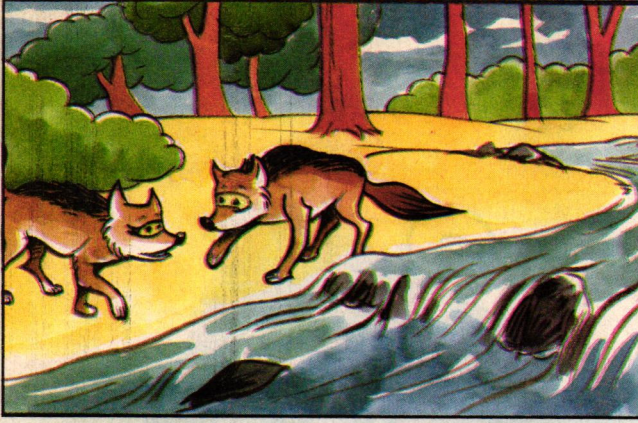
(इ) यदि उसके पिता के अलावा मोना की माँ भी उसे पहले दिन १०० दूसरे दिन २०० तीसरे दिन ४०० और इसी प्रकार आगे भी दें, तो उसकी गुलुक कितन दिन आधी भर जाएगी?

नोट: इसका हल अप्रैल २०१३ के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

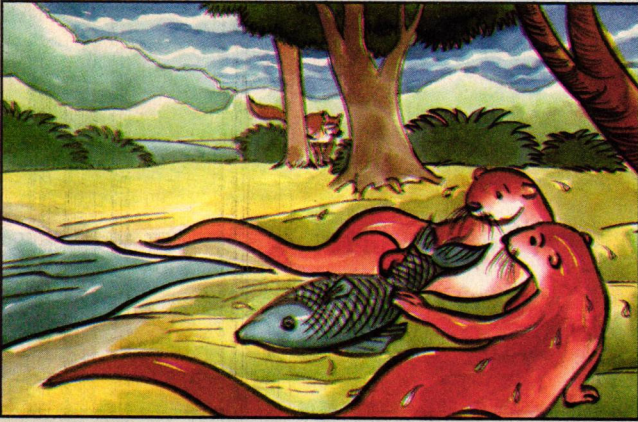
सबसे त्वरित फॉर्मूले को ५००० का पुरस्कार दिया जाएगा!

यदि पाँच से अधिक सही प्रविष्टियाँ हुईं, तो सभी सफल प्रतिभागियों को १००० मिलेंगे। अपनी प्रविष्टियाँ डाक के पते, पिन कोड के साथ २८ फरवरी २०१३ तक इस पते पर भेजो:

Editor, Chandamama India Ltd., No.2, Ground Floor, Swathi Enclave,
Amman Koil Street, Vadapalani, Chennai-26. (or) online@chandamama.com



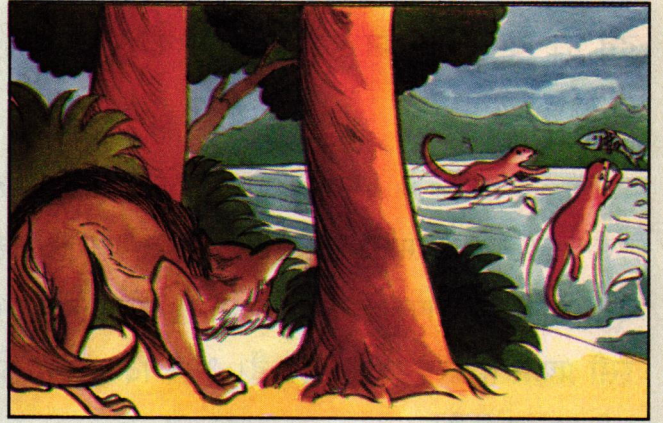
सियार मोटी मछली की तलाश में नदी के आस-पास घूमने लगा। अचानक उसे नदी में मछली पकड़ते दो ऊदबिल्व दिखे वह पेड़ के पीछे छुपकर तमasha देखने लगा।



“वह! शानदार! मैं इसका सिर लूँगा... मजा आ गया!” एक ऊदबिल्व बोला। दोनों मछली के बँटवले पर लड़ने लगे। “मेरी मदद के बिना तुम यह मछली नहीं पकड़ सकते थे। इसलिये मुझे इसका सिर चाहियो” दूसरे ने कहा।

न्यायकर्ता

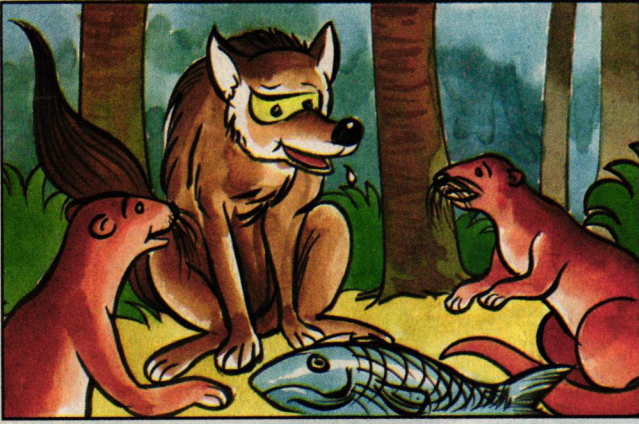
एक सियार अपनी पत्नी के साथ एक नदी के किनारे रहता था। एक दिन, उसकी पत्नी ने उससे एक अजीब सी माँग की, “मुझे आज मोटी-ताज़ी मछली खाने की इच्छा है। क्या तुम मेरे लिये ला सकोगे?” “हाँ क्यों नहीं प्रिय!” सियार बोला।



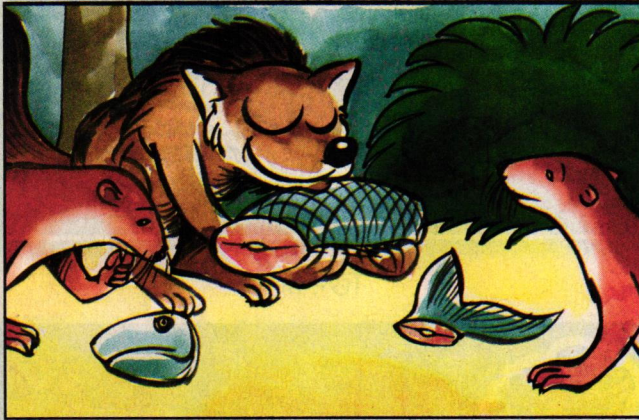
एक ऊदबिल्व ने एक बड़ी मछली पकड़ ली। लेकिन यह क्या? मछली ऊदबिल्व को खींचकर पानी में ले जाने लगी। “वहाँ खड़े-खड़े क्या देख रहे हो? इसे बह्र लाने में मेरी मदद क्यों नहीं करते?” कहकर उसने अपने मित्र को मदद के लिये बुलाया। दूसरा ऊदबिल्व भी आ गया और दोनों ने मिलकर मछली को बह्र निकाल लिया।



जातक कथा



“क्यों नहीं? मैं कई झगड़ों में न्यायाधीश का काम कर चुका हूँ। यह तो एक छोटी सी समस्या है। अब मछली मुझे दे दो और मैं इसका बराबर बँटवारा कर दूँगा,” सियार बोला।



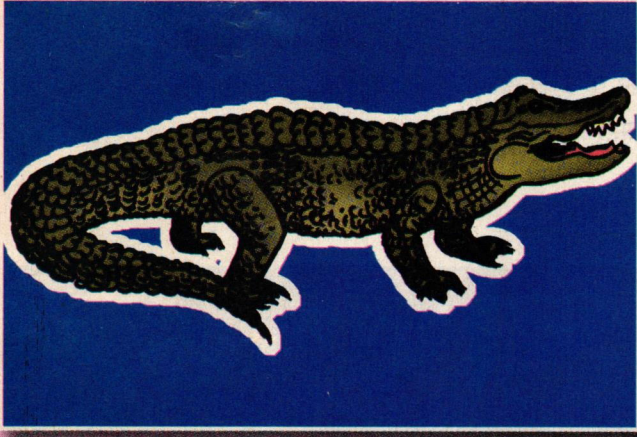
और फिर बड़ा हिस्सा लेकर सियार वहाँ से रफूचकर हो गया। दोनों ऊदबिलग अपनी मूर्खता पर सिर धुनते रह गए।

फिर सियार ने मछली के सिर और पूँछ के हिस्से अलग करके एक हिस्सा एक सियार को और दूसरा दूसरे सियार को दिया। फिर वह बोला, “और बीच का हिस्सा तुम दोनों के बीच इस मसले को शान्तिपूर्वक सुलझा देने का मेरा पश्चिमिक है!”

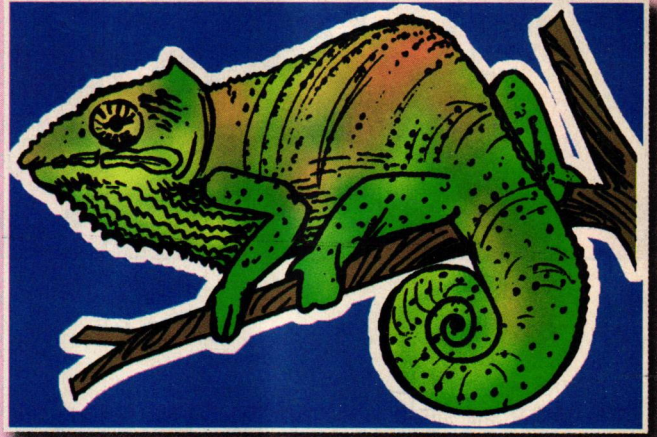


ट्रेज़र बॉक्स

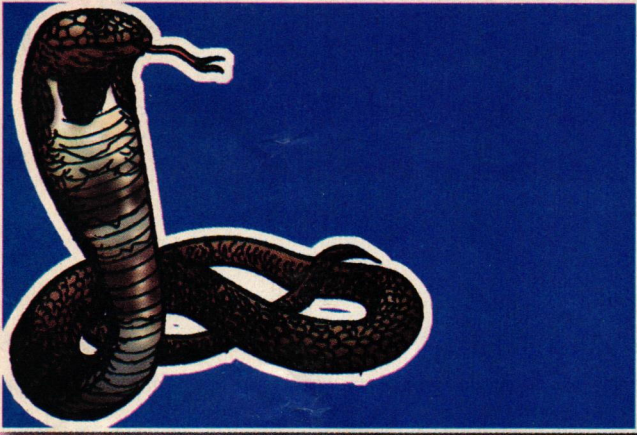
इस माह, आओ हम सरीसृपों के कुछ चित्रों पर एक एल्बम बनाते हैं।



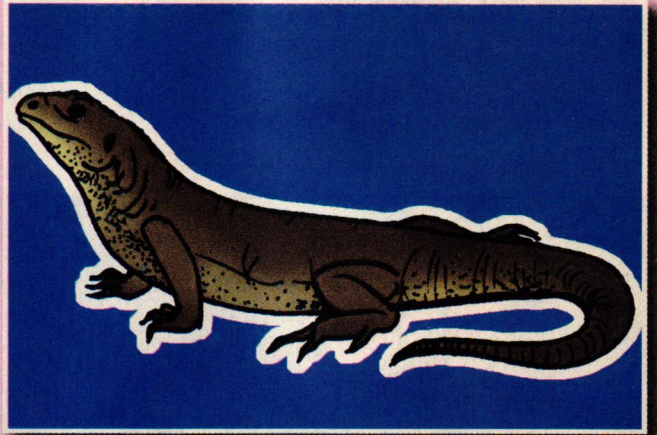
मगर



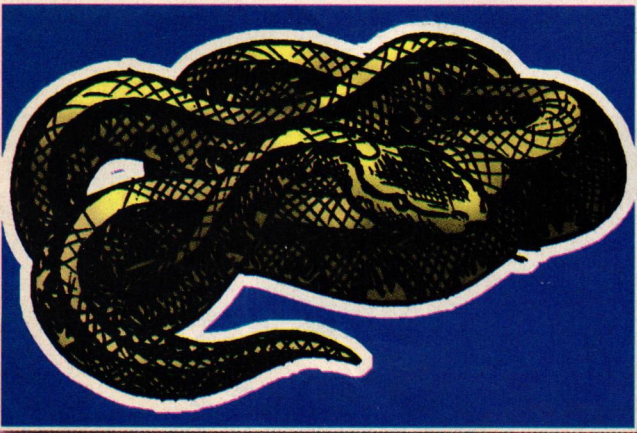
गिरगिट



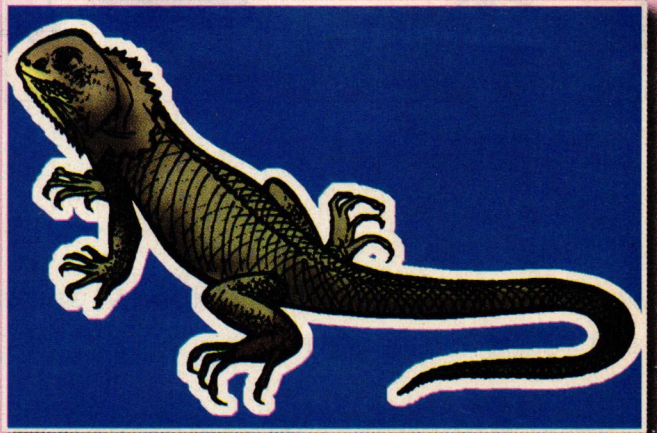
साँप



छिपकली



अजगर



गोहा

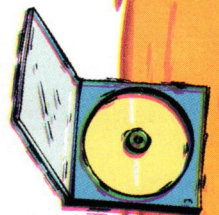
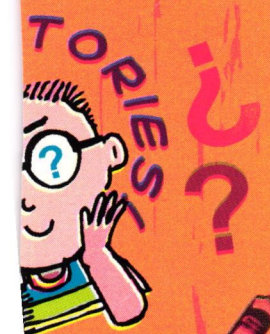
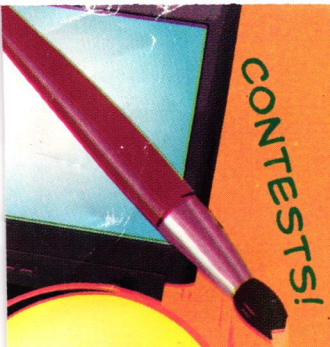
Check out

the coolest place on the web,

Chandamama.com

Guaranteed to provide
you with a ton of fun!

- Post your jokes at online@chandamama.com
- Submit your story online and win the chance to get published in Chandamama..
- Enjoy Comics !
 - Dushtu Dattu
 - Bheem Boy
- Read Mister Muthu's adventures
- Download and play games
- Shop for books and posters
- Play games in Funzone
- Download cool wallpapers



**mango[®]
bite**



SLOW CYCLING

SLOW CYCLING

आम की रसीली गोली
ENJOY VERY SLOWLY

